Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अपना अपना राग है

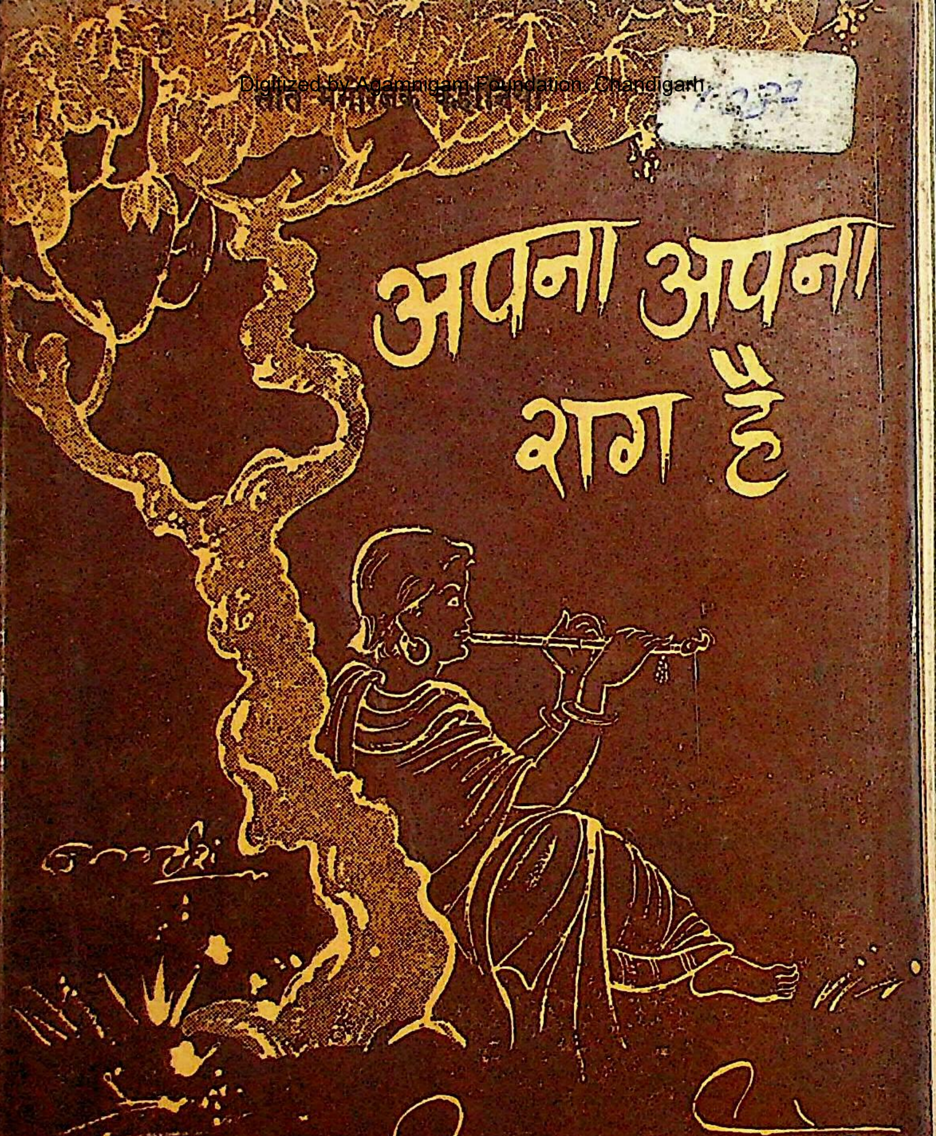

दीनानाथ दिनेश

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

मानवधर्म कार्यालय, दिल्ली

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अपना-अपना राग है

सात मनोरंजक कहानियाँ

श्री दीनानाथ भार्गव दिनेश

१९६१

मानवधर्म कार्यालय

रघुगंज चावड़ी बाजार,

दिल्ली ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रकाशक—
मानवधर्म कार्यालय
रघुगंज चावड़ी बाजार, दिल्ली।

मूल्य २)

मुद्रक—
जमना प्रिंटिंग वर्क्स
पीपल महादेव, दिल्ली-६

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अपना-अपना राग है

बोल

कहानी साहित्य का महत्त्व इसी से स्पष्ट है कि भारतीय संस्कृति के रचनात्मक और कर्म-प्रेरक ग्रन्थ रामायण, महाभारत, भागवत, पञ्चतन्त्र आदि कथा-कहानी रूप में लिखे गये हैं।

मनोरंजन के साथ-साथ इन ग्रन्थों की पृष्ठभूमि में ज्ञान, सदाचार, भक्ति और कर्म का स्पष्ट दर्शन है।

कहानी-साहित्य का ध्येय केवल मनोरंजन नहीं है, कहानी हृदय को छूती है, गुदगुदाती है और अपनी छाप लगा देती है। यही साहित्य की सफलता का चिह्न है।

यह स्थूल सत्य जाना गया है कि सामान्यतः मनुष्य बुद्धिजीवी होकर भी बुद्धि पर कम-से-कम भार डालना चाहता है। प्रायः उसे काम, क्रोध, लोभ, मोह, ममता, अहंकार आदि वृत्तियों को उत्तेजित करनेवाला हल्का और सस्ता साहित्य अधिक रुचिकर लगता है। ज्ञान, सदाचार, कर्म और भक्ति को भी वह अपने ही रंग में रंगना चाहता है और अनुकूल होने पर ही ग्रहण करता है।

इसी कारण मनुष्य में व्यसन तथा दुर्भाव अधिक है और शील तथा सद्भाव अपेक्षाकृत बहुत कम है। प्रायः देखा जाता है कि मनुष्य संस्कृति,. ज्ञान, सभ्यता और धर्म की बड़ी-बड़ी बातें करता है परन्तु वासना के आधीन होकर तुच्छ विकारों और क्लेशों में उलझा रहता है। अंग्रेजी में कथन है—

'Scratch the modern man and you will find a savage in him.'

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri / Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

आज के मनुष्य को देखो, उसमें आपको बर्बरता मिलेगी।

मनुष्य अपनी प्रतिष्ठा के लिये, पेट के लिये अनेक प्रकार के स्वांग रचता है; संयम करता है—भय से, त्याग की बातें बनाता है—अपने को विरक्त दिखाने के लिये। बाहरी व्यवहार में शिष्टता है परन्तु आन्तरिक जीवन छल-कपट से भरा पड़ा है। समाज में घोर दम्भ और मिथ्याचार प्रवेश कर गया है।

'अपना-अपना राग है' की अधिकांश कहानियों में सत्य के मुख को खोलने का प्रयत्न किया गया है, जो चमक-दमक से ढका हुआ है।

श्री अरविन्द ने अपनी योग-दृष्टि से देखा है—

The average human being is in his inward existence as crude and undeveloped as the primitive man was in his outward life.

औसत मानव प्राणी अपनी आन्तरिक सत्ता में उतना ही असंस्कृत और अविकसित है जितना कि आदिम मनुष्य अपने बाहरी जीवन में था।

स्वतन्त्र भारत में मनुष्य के इस मिथ्याभाव और कुटिल स्वभाव का रूपान्तर करना होगा। 'अपना-अपना राग है' की कहानियों का यही उद्देश्य है।

अत्यन्त मनोरंजक 'हृदय-स्पर्शी दंतकथायें' और 'शिक्षाप्रद पौराणिक कथाएँ'—कहानियों की दो पुस्तकें शीघ्र ही प्रकाशित की जा रही हैं। आशा है पाठकों का स्नेह और सहयोग प्राप्त होगा।

नृसिंह चतुर्दशी
सं० २०१८

दीनानाथ दिनेश

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

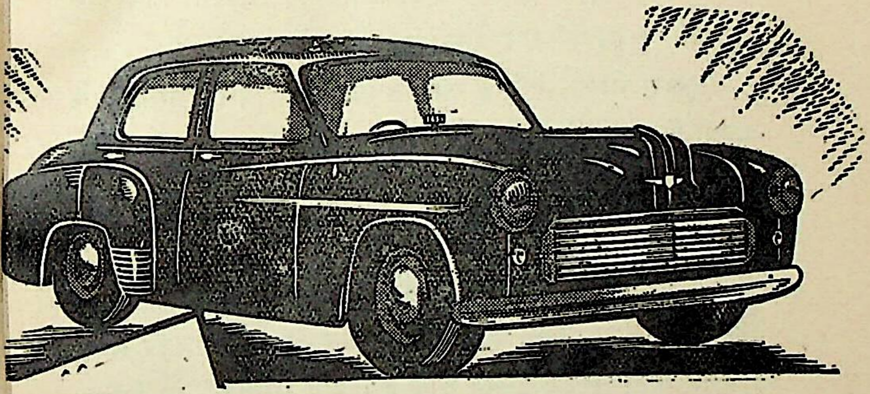

भ्रम-जाल

एक तिमंजिले भवन के नीचे वह सजी सजायी कार आकर खड़ी हुई। सबने समझा कोई दूल्हा आया है। स्त्रियां आस-पास की अट्टालिकाओं से झाँकने लगीं। बालक सड़क पर खड़े हो गये। भवन के तोरणद्वार से कुछ लोग फूलों की मालाएँ लेकर दौड़ते हुए निकले।

ड्राइवर ने उतरकर मोटर का द्वार खोला। बालकों की आशा, निराशा में परिणत होगयी। एक भारी शरीर के अधेड़ संन्यासी मोटर से उतरे।

स्वामीजी की मोटर के पीछे लगभग बीस मोटरें और होंगी। मोटरों से उतरनेवाले महानुभाव प्रायः धनी-मानी व्यक्ति थे और सभी के ललाट पर किसी न किसी प्रकार की छाप लगी थी।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

एक ने कहा—"ये हैं सेठ खटपटानन्द, जिन्होंने गत तीन वर्षों में ग्यारह कोठियाँ बनवायी हैं।"

दूसरा बोला—"ये हैं लखपत पाण्डे जो अनेक संस्थाओं के मन्त्री हैं। इन्होंने पाठशाला, धर्मशाला, गौशाला आदि अनेक शालाओं की स्थापना की है; बड़े-बड़े मन्दिर बनवाये हैं, इन्हें कभी धन की कमी नहीं पड़ती।"

"और ये हैं श्री चितपटलाल जिनसे छोटे बड़े सब डरते हैं। हिन्दू महासभा, संघ, कांग्रेस, समाजवादी दल, मजदूर सभा, किसान पार्टी सबमें इनकी धाक है। सब संस्थाओं के टिकिट इनकी जेब में रहते हैं। सरकारी क्षेत्रों में भी इनका प्रभाव है। इनके पास पहुँच कर किसी का कोई काम अधूरा नहीं रह सकता।"

एक ने कहा—"स्वामी जी बहुत बड़े आदमी हैं। उनके शिष्यों में कोई भी तो छोटा नहीं है।"

"जज, वकील, डाक्टर, अफसर, व्यापारी, धनी-मानी स्वामीजी की शरण लेकर कृतकृत्य होते हैं।"

दूसरे ने दीनता से कहा—"भाई! गरीब में क्या आत्मा नहीं है। भगवान् दीनबन्धु हैं। बड़े महात्मा वही हैं जो गरीब का हित करें।"

तीसरा धीरे से बोला—"अरे चुप रहो! ऐसा न कहो!!"

चौथा कड़ककर कहने लगा—"क्यों न कहें जी? देखते हो! हमारे इन नंगे-भूखे अस्थिकंकाल बालकों को! यह सब इन्हीं बड़ों की कृपा का फल है।"

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

"महात्माओं का आशीर्वाद लेकर लूटमार करने में दोष नहीं लगता भाई !" पांचवाँ व्यक्ति कहता हुआ चला गया।

× × ×

भवन की तीसरी मंजिल पर एक सुन्दर स्वच्छ कमरे में स्वामी जी ठहराये गये। युवक लखपत पाण्डे द्वार पर बैठ गये और आनेवालों से कहने लगे—"इस समय स्वामीजी के दर्शन नहीं होंगे। स्वामीजी पूजा में हैं।"

सबके चले जाने के पश्चात् लखपत पांडे ने अपने सहायक को द्वार पर खड़ा किया और किसी को अन्दर न आने का आदेश देकर स्वयं स्वामीजी के निकट पहुँचे। साष्टांग नमस्कार किया। स्वामीजी के चरण धोकर पीये और बोले—"गुरुदेव ! मुझ पर आपकी बड़ी दया है। अल्पकाल में ही मैंने वह सब कुछ कर लिया जो मेरे बाप-दादा भी नहीं कर पाये थे। हुकूमत मेरे हाथों में खेलती है, मजदूर सभा का सभापति हूँ, समाजों का मन्त्री हूँ, पत्रकार, प्रचारक, संयोजक सब कुछ हूँ।"

स्वामीजी ने आंख उठाकर देखा, मुस्कराये और अपना हाथ लखपत के शीश पर रखा—

"क्या चाहते हो ?"

लखपत की आंखों से टप-टप आंसू गिरने लगे।

"कुछ बोलो तो ?"

"स्वामी जी ! मैं अपनी रंगीन दुनिया में अधर लटक रहा हूँ ! मेरे चारों ओर आग धधक रही है। मैंने कितने पाप किये

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

हैं, क्या कहूँ...!"

"घबराओ मत, हम तुम्हें अपना तप देंगे।"

लखपत ने जेब से दो गड्डी नोटों की निकाली और स्वामीजी की सिद्ध थैली में डाल दी।

"गुप्तदान की बड़ी महिमा है", स्वामीजी सिर हिलाते हुए बोले—

"जी ! स्वामी जी ! कहीं इसका उल्लेख न हो।"

लखपत को पाकर स्वामीजी प्रसन्न हुए। लखपत एक सुन्दर युवक था। बड़ी-बड़ी आंखें, ऊँचा माथा, गौर वर्ण, मधुर वाणी, लक्ष्मी और विद्या दोनों ने उसे वरण किया था। उसमें आकर्षण था—विशेषकर नारियों के लिये।

स्वामी जी ने लखपत को प्रधान शिष्य बनाया।

धीरे-धीरे लखपत के हाथों में स्वामी जी का सारा प्रबन्ध आ गया। हिसाब-किताब व्यवस्था आदि करने के अतिरिक्त वह स्वामीजी के प्रवचन लिखता, पत्रों में सूचना भेजता, अधिक-से-अधिक प्रचार करता, दर्शकों को स्वामी जी से मिलाता और सभा-मञ्चों पर खड़ा होकर स्वामीजी की सिद्धि-प्रसिद्धि का शंख बजाता।

स्वामी जी के तप और ज्ञान की चर्चा वायु की भांति चारों ओर फैल गयी। दुःखी और माया-मोहित जनसमुदाय सदा किसी सहारे की खोज में रहता है। तिल का ताड़ बनाने में नर-नारी अपना सौभाग्य समझते हैं और एक जो कहता है दूसरा

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

उसका समर्थन करता है। भेड़ों की भांति ऐसे मोहित और भ्रमित भक्त एक-दूसरे के पीछे चलकर कुछ क्षणों के लिये प्रसन्न हो लेते हैं।

भीड़ की भीड़ दर्शनार्थ आने लगी। लखपत अपनी कुशलता से स्वामी जी के आदेशानुसार सारी व्यवस्था करते थे।

स्वामीजी स्त्रियों के प्रति विशेष कठोर थे। अपने प्रवचनों में प्राय: कहा करते थे कि कामिनी और कंचन ये दो घोर दु:ख तथा पतन के कारण हैं। स्वामी जी का कड़ा आदेश था कि कोई स्त्री उनके सन्मुख न आये और कोई उन्हें धन न दिखाये। परन्तु युवतियां आती न हों, ऐसी बात न थी और सिद्ध थैली भी सदा भरी रहती थी।

× × ×

सायंकाल एक विशाल सजे-सजाये पण्डाल में स्वामीजी का प्रवचन होना था। ठीक समय पर घण्टे-घड़ियालों की ध्वनि हुई, शंख बजे और मशालों के प्रकाश में स्वामी जी पालकी में बैठकर पधारे। श्रोताओं की अपार भीड़ थी। स्वामी जी का भव्य दर्शन उनके लिये स्वर्ग का सोपान था और चरण-स्पर्श तो मानो मुक्ति-पत्र था।

स्वामी जी मंच पर बैठ गये, लखपत ने अर्ध उन्मीलित नेत्रों से श्रीचरणों की ओर देखा, गम्भीर श्रद्धा से आगे बढ़ा, चरण-पूजन किया और चरणामृत लिया। उसकी देखा-देखी पहले दो-चार आगे बढ़े फिर दस-बीस और फिर तो तांता बँध गया। महिलायें भी पीछे नहीं रहीं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

कुछ समय पश्चात् लखपत ने कहा—
"बस करिये विलम्ब हो रहा है।"

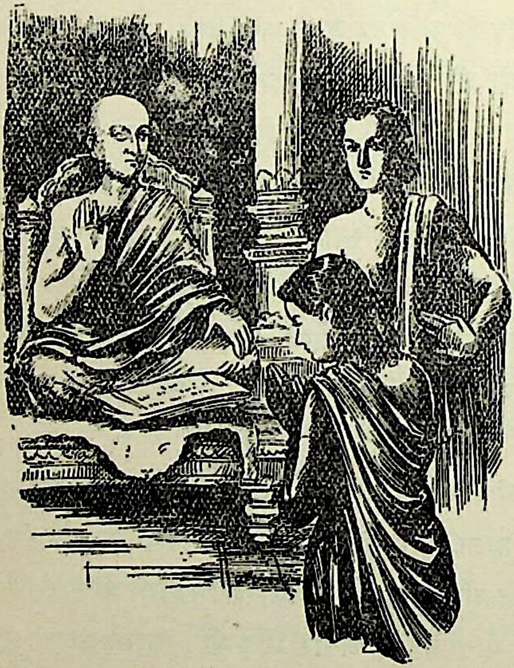

उसी समय स्वामी जी ने आंखें खोलीं, देखा कि एक सभ्य युवती उनके सन्मुख शीश झुकाये हाथ जोड़े खड़ी है। युवती में आकर्षण था। लखपत को उसे हटाने का साहस नहीं हुआ। स्वामी जी ने पहले युवती पर और फिर लखपत पर एक कठोर दृष्टि डाली। लखपत ने तुरन्त हाथ जोड़ कर युवती को बैठ जाने का संकेत किया।

प्रवचन प्रारम्भ हुआ—"सभ्य सज्जन वृन्द ! मुक्ति के मार्ग

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

की सबसे बड़ी बाधा नारी है। नारी से दूर रहो, यह पापों की पिटारी और भारी भयकारी है।"

इसी समय वह युवती—जो पहले भी कुछ कहना चाहती थी और जिसे लखपत ने संकेत से बैठा दिया था—खड़ी हुई और साहस से आगे बढ़कर स्वामीजी के पास आयी—

"नारी पाप की पिटारी है? जिसने तुम्हें जन्म दिया?"

श्रोता अवाक् थे। लखपत उस युवती की निर्भीकता और तेज से दब गया। स्वामी जी ने उसकी चमकती हुई आंखों पर अपनी आंखें टिकायीं पर निमिषमात्र को भी ठहरा न सके।

गम्भीर गर्जना के साथ उन्होंने कहा—

"इसे हटाओ!"

स्वामीजी का मुखमण्डल क्रोध से तमतमा रहा था।

"किसका साहस है जो मुझे छू सके!" युवती ने कोमल किन्तु ओजपूर्ण स्वर में कहा; "स्वामीजी, आप क्यों व्यर्थ का ढोंग रच रहे हैं। जिसे आप पाप की पिटारी कहते हैं उसने राष्ट्र को रत्नों से भर दिया है—राम, कृष्ण, गौतम, शंकराचार्य, नानक, कबीर, सूर, तुलसी उसी पिटारी के जगमगाते हुए रत्न हैं। श्रोताजनो! अपनी माता, बहिन और भार्या की निन्दा सुनते तुम्हें लाज नहीं आती। तुम्हारे आराध्यदेव श्रीराम ने व्यर्थ ही सीता को पाने के लिये जीवन की बाजी लगायी। नारी-जाति का उद्धार करने वाले श्रीकृष्ण धर्म से अनभिज्ञ थे? यह व्यर्थ विडम्बना है, अपनी कमजोरी को नारी के माथे मढ़कर पुरुष

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अपना पाप छुपाना चाहता है। अभी जब महिलायें चरण-स्पर्श कर रही थीं तब स्वामी जी की आंखें बन्द थीं, वे मन ही मन प्रसन्नता से पाप का पोषण कर रहे थे !"

एक व्यंग भरी मुस्कराहट युवती शीला के मुख पर खिल रही थी। स्वामीजी के मिथ्या मानव पर उसके स्पष्ट सत्य ने विजय प्राप्त कर ली।

श्रोताजन कामाफूंसी करने लगे। युवकों और युवतियों को रूढ़िवाद से मोर्चा लेने की सामग्री मिल गयी। वृद्धों और वृद्धाओं को भय हुआ—कहीं स्वामी जी श्राप न दे दें।

'मां की निन्दा', 'अपनी कमजोरी' 'पाप का पोषण' तीनों शब्द लखपत के कर्ण पट पर टकराये और हृदय गुहा में गूँजकर मुख से प्रतिध्वनित हुए—'मां की निन्दा—अपनी कमजोरी—पाप का पोषण'–वह आगे आया, स्वामीजी आंखें फाड़-फाड़कर देख रहे थे।

श्रोता सावधान हुए। शीला ने लखपत की ओर निहारा मानो, अपने चंचल दृगों और मुस्कराते हुए अधरों से लखपत के मिथ्या-विश्वास को चुनौती दी हो।

शीला ने लखपत के हृदय को छू लिया था और उसमें एक नयी झङ्कार उत्पन्न करदी थी।

लखपत बोला—"प्रिय श्रोतागण ! आज एक विचित्र विचार-धारा ने मुझमें क्रांति की लहर उठा दी है। मुझे सत्य का किनारा मिला है। मैंने जीवन में बीसियों संस्थायें बनायीं, सत्संग किया, सेवा की, परन्तु मूल में मिथ्याचार रहा। शील और

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सत्य की एक ही झलक ने मेरी आंखें खोल दीं। मैं यह नहीं बताना चाहता कि स्वामी जी की थैली किस प्रकार शिष्यों द्वारा सिद्ध होती है ? स्वामीजी पीतल का सोना कैसे बनाते हैं ? पत्थर के टुकड़ों को किस कला से कलाकन्द कर देते हैं ? पर यह सत्य है कि स्वामी जी मेरे कलुषित जीवन, क्षुद्र हृदय और भ्रमित बुद्धि को नहीं बदल सके। आज मैंने जाना—बनावट पाप है और स्वाभाविकता पुण्य है।"

सब अवाक् थे। शीला ने सभामण्डप से प्रस्थान किया और उसके पीछे-पीछे लखपत भी चला। चलते समय वह स्वामी जी और उस धार्मिक जन समाज को नमस्कार करना न भूला।

× × ×

शीला ने आचार्य परीक्षा पास की थी, साहित्य और समाज में उसकी अच्छी गति थी। वह स्वतन्त्र विचारक थी, शास्त्रों का उसे ज्ञान था। ज्ञान के साथ-साथ वह कला की देवी और सौन्दर्य की प्रतिमा थी। उसके अंगो में यौवन, नेत्रों में मादकता, वाणी में रस और चाल में गम्भीरता थी। छोटी आयु में ही वह महाविद्यालय में प्रोफेसर नियुक्त हो गयी थी। विद्यार्थी उससे पढ़कर प्रसन्न होते थे। शीला की कक्षा में उपस्थिति प्रायः पूरी रहती थी।

शीला आज अपने साथ लखपत को ले आयी—जीवन का पाठ पढ़ाने। शीला में प्रसाद छलका पड़ता था परन्तु लखपत भूला-भूला सा लगता था। उसका मुख विवर्ण हो रहा था और नेत्र संकोचवश सम्मुख नहीं ठहरते थे।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

यमुना के किनारे सिविल लाइन पर शीला एक छोटे किन्तु स्वच्छ कुटीर में रहती थी। माता-पिता उसे बालकपन में ही छोड़ गये थे। एक सेविका थी और वह थी।

फर्श पर बिछे हुए कालीन पर लखपत को मानपूर्वक बैठा कर वह स्वयं भी बैठ गयी।

इसी समय सेविका ने प्रवेश किया। शीला का संकेत पाकर वह उल्टे पैरों लौटी और शीघ्र ही दो गिलास जल के रख गयी।

शीला ने सहज भाव से मुस्कराते हुए कहा—"लीजिये।"

दूसरा गिलास अपने होठों से लगा कर वह बोली—'कितना शीतल और मधुर है! शीतलता मधुरता और रस में जीवन है।'

लखपत कुछ न बोला। उसका धनी और मानी जीवन धोखे

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

 Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

की टट्टी था। उसने सत्य और सरलता के रस का कभी स्वाद नहीं लिया था। वह समझ नहीं पाया कि वह किस परिस्थिति में है? शीला के निःसंकोच व्यवहार से वह सशंकित था।

"इस में कोई धोखा नहीं है लखपत! प्राकृतिक मधुरता और शीतलता है। जल का दूध बना देने की कला तो मैं जानती नहीं!"

लखपत मौन था। वह अपने आप ही दबा जा रहा था।

"आपको स्वामी जी के वियोग का दुःख है? आप अपने पिछले जीवन में उलझे हुए हैं? मैं कहती हूँ—जिसने आपको सन्मार्ग पर लाने का विश्वास दिलाया, उसे कभी सन्मार्ग पर चलते देखा? जिससे आप मुक्ति की भीख मांगते हैं, वह कठोर बन्धनों में जकड़ा हुआ है। आप जिस आनन्दमय जीवन का स्वप्न देख रहे थे, वह आशा और तृष्णा के फंदों का एक भ्रम-जाल है।"

"अधिक न कहो शीला! मैं यहाँ से भाग जाना चाहता हूँ।"

"सत्य को छोड़ कर आप जहाँ भागेंगे वहाँ से भागना पड़ेगा। मैं आपको अपना शिष्य नहीं बना रही हूँ। मैं स्वतन्त्र हूँ—चाहती हूँ कोई बन्धन में न रहे। मेरे सुखी मानस में दैवी साम्राज्य है, चाहती हूँ कि आप भी उसके आनन्द का उपभोग करें। जगत् में कौन छोटा है और कौन बड़ा? न कोई सुखी है और न कोई दुःखी। सभी दुर्गम पहाड़ों की घाटी से पार होने का प्रयत्न कर रहे हैं। कभी किसी के ऊपर दुःख के पत्थर लुढ़क

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पड़ते हैं और कभी सुख के सुमन किसी के शीश पर आ पड़ते हैं। हँसते-खेलते प्रसन्नता से इस घाटी को पार कर जाना मानवधर्म है।"

"आप मुझ से क्या चाहती हैं ?"

"नहीं समझे ?" शीला ने अपने मादक नयन लखपत की आंखों में डालते हुए कहा—

"लखपत ! आपने क्या जाना ? नीरस और शुष्क रहकर भोले-भाले नर-नारियों को छलना ! भ्रम और अज्ञान के पाटों में प्राणियों को पीसना ! मनुष्य होकर पशु से भी भयंकर कर्म करना ? आपने प्रेम करना नहीं सीखा, सेवा का पाठ नहीं पढ़ा, रँगे हुओं की दुनियाँ देखी है, अब आप स्वच्छ निर्मल आकाश के नीचे एकान्त में बैठकर जीवन के सौंदर्य का दिव्य आनन्द लीजिये। देखिये जगत् में कितना सुख है ? प्रेम में शान्ति छलकी पड़ती है, इसका अनुभव आप जैसे युवक ही कर सकेंगे। मुझे तुम्हारी आवश्यकता है।"

"मैं कुछ नहीं समझ रहा शीला ! आप क्या चाहती हैं ?"

"मैं चाहती हूँ आपका हृदय।"

"किसलिये ?"

"संतप्त जीवों की सेवा के लिये।"

लखपत ने आज एक नई प्रकाश की किरण देखी। उसने व्यक्ति-पूजा और अंधविश्वास में अपने जीवन के २५ वर्ष व्यर्थ खो दिये। त्याग के नाम पर भोग, धर्म के नाम पर मिथ्याचार,

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सेवा के नाम पर स्वार्थ-साधना का नग्न नृत्य वह देख चुका था। उसकी आत्मा इस आवरण को हटा देने के लिये छटपटा उठी। वह बोला—

"शीला ! तुमने मेरी आँखें खोल दीं। अब तक मैं निर्जीव धर्म से आत्मा के सौंदर्य को ढके हुए था। निःसन्देह सत्य, सेवा और त्याग धर्म के प्राण हैं। तुमने मुझे नया जीवन दिया है।"

"मैं जानती हूँ लखपत ! आपके जीवन में प्रवाह है और जब वह मुक्त होकर उमड़ेगा तो बड़ी-बड़ी बाधक चट्टानें उखाड़ता हुआ चलेगा।"

"शीला ! मैं तुम्हें अपना परिचय देदूं। मैं अनेक स्थानीय प्रान्तीय और अखिल भारतीय संस्थाओं का संस्थापक, सभापति और मंत्री हूँ। जनता में मेरा मान है। कार्यकर्ता मेरे साथ हैं···।"

"यह सब धोखा है लखपत ! राग द्वेप और दलबन्दी का नाम संस्था है। पद-लोलुपता और मान-बड़ाई की वासना के बन्धुओं का नाम कार्यकर्ता है। संस्थाओं के चालक, सभापति, मन्त्री होकर और जनता से अस्थिर मान पाकर अहंकार का पोषण भले ही होता रहे सेवा का कार्य नहीं होता।"

"सेवा के लिये क्या करना होगा।"

"त्याग। त्याग की अभिलाषा सब अभिलाषाओं को मिटा-कर जब स्वयं भी मिट जाती है तब सत्य का अनुभव होता है।"

"तप और त्याग की बातें तुम्हारे मुख से सुनकर मैं एक उलझन में पड़ गया हूँ शीला !"

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

"उलझन प्रेम से सुलझती है। प्रेम तप से होता है। कुचेष्टाओं के अन्त कर देने को तप कहते हैं।"

× × ×

लखपत के चले जाने से स्वामी जी बहुत उदास हो गये। लखपत उनका दाहिना हाथ था। वह उनकी सिद्धि और चमत्कारों से परिचित था। सबसे बड़ी व्यथा तो यह थी कि एक छोकड़ी स्वामी जी के देखते-देखते उसे उनसे छीन ले गयी। स्वामी जी के शिष्यों ने सूचना दी कि लखपत ने सब संस्थाओं से अपने को हटा लिया है। शीला और लखपत एक ही स्थान पर रहते हैं।

सायंकालीन प्रवचन के पश्चात् स्वामी जी ने चितपटलाल को अपने पास बुलाया और एकान्त में कुछ परामर्श दिया।

दूसरे ही दिन प्रातःकाल पत्रों में समाचार छपे—स्वामी जी ने अपने प्रमुख शिष्य लखपत को चरित्र-हीनता के कारण निकाल दिया है। लखपत ने एक स्त्री के मोह में पड़कर धर्म का मार्ग छोड़ दिया। धर्म की परम शत्रु नारी है।"

समाचार पढ़कर लखपत क्रोध से तिलमिला गया। उसे स्वामी जी के प्रति घृणा हुई। शीला ने सरलता से कहा—

"लखपत! क्रोध से नहीं, प्रेम से परमेश्वर प्रसन्न होता है।"

"और यह सब अपकीर्ति?"

"यह कीर्ति में बदल जायेगी। विजय सत्य की होती है।"

× × ×

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

धनिकों ने लखपत के धन पाने के मार्ग रोक दिये। धार्मिकों ने उसे दुराचारी प्रसिद्ध किया। जनता अन्धी होकर एक दूसरे के पीछे चलती है। लखपत को कहीं मुँह दिखाने का स्थान नहीं रहा। वह एक विद्यालय में पढ़ाने लगा। माता-पिताओं ने अपने पुत्रों को उस विद्यालय से उठा लिया। शीला अपनी नौकरी पर जाती थी पर नर-नारी उस पर उँगली उठाते थे। विद्यार्थियों को हास्य की सामग्री मिल गई. लखपत और शीला की चर्चा से लोगों का फालतू समय कटता था।

एक दिन महाविद्यालय की प्रबन्धक समिति ने शीला को बुलाकर कहा—

"तुम्हें विद्यालय छोड़ना होगा। अथवा लखपत को छोड़दो!"

शीला ने विद्यालय छोड़ना स्वीकार किया।

लखपत ने जीवन-निर्वाह के लिये अपनी एक कोठी बेच दी।

× × ×

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सन् १६४७ में देश के कोने-कोने में साम्प्रदायिक विद्रोह की आग भड़क उठी। मनुष्य, पशुओं की भांति मनुष्य को काट देता था। बूढ़े, स्त्री, बालक, युवक कोई पाशविकता से न बच सके। लाखों नर-नारी बेघरबार हो गये।

शीला ने कहा—"लखपत! यही सेवा करने का समय है।"

दोनों ने मिलकर सैकड़ों युवतियों की लाज बचायी, अनाथों की रक्षा की, अनाश्रितों को आश्रय दिया। शीला ने अपनी कुटिया के आस-पास पीड़ितों का कैम्प लगा दिया। लखपत ने उनके लिये जीवन-यापन के साधन सुलभ किये। धीरे-धीरे शीला और लखपत पीड़ितों के प्राण बन गये। उन्होंने बालकों के लिये स्कूल खोले, स्वयं कैम्पों में जाकर सफाई की, पीड़ितों को सुविधा दिलाने के लिये लड़े, गृह-उद्योग प्रारम्भ कराये और सत्संग लगाये।

एक दिन यमुना किनारे सत्संग चल रहा था। स्वामी जी और उनके शिष्य स्नान करने के लिये आये। स्वामी जी के कान में भनक पड़ी, उन्होंने सुना—"संसार से सुख की आशा मत रखो, यही संसार का त्याग है। सबकी सेवा करो यही तप है। किसी से घृणा मत करो, यही भक्ति है। बुराई को फिर न दुहराओ यही प्रायश्चित है। ऐसा कोई कार्य न करो जिससे तुम अपनी दृष्टि में गिर जाओ। जो अपनी दृष्टि में गिरा हुआ है वह ईश्वर की दृष्टि में भी गिरा हुआ होता है। विषयों की पूजा करनेवाला सदा अपनी दृष्टि में गिरा रहता है। बाहर उसका कितना ही मान

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

हो, आत्मा उसे घृणित और पापी मानता है, इसी कारण उसके चित्त को कभी चैन नहीं मिलता।"

स्वामी जी ने कमण्डल फैंक दिया और दौड़ते हुए जाकर शीला की चरण-रज माथे पर लगायी। उसी मादकता भरी मुस्कान से शीला ने स्वामी जी की ओर निहारा। लखपत स्वामी जी के चरण छूने को उठा पर स्वामी जी ने उसे हृदय से लगा लिया और बोले—

"लखपत ! तुमने शीला जैसी पत्नी पाकर जीवन सफल कर लिया।"

"पत्नी नहीं, स्वामी जी ! बहिन।"

"तो मैं भ्रम में था ?"

"मुझे खेद है कि इस बाने में भी आपने सत्य को नहीं जाना।'

"सत्य कहती हो शीला ! मैंने कभी सत्य को जानने का प्रयत्न नहीं किया। जीवन भर असत्य का खेल खेला है। भ्रम-जाल में फँसा हूँ और फँसाया है। आज तुम्हारी सहायता से बलपूर्वक इस जाल को तोड़ता हूँ।"

"अब तक हम दो थे स्वामी जी ! अब तीन हो गये। आप भी आज ब्रह्मचर्य, सत्य और सेवा का व्रत लीजिये।"

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मस्तराम

मस्तराम उसका नाम था। 'यथा नाम तथा गुण' वह पूरा मस्त था। चिन्ता उसके पास नहीं फटकती थी, विषाद उसे छू नहीं पाता था, भय उसमें नाम को भी नहीं था, प्रसन्नता उसके रोम-रोम से फूटी पड़ती थी। खेत पर जाना, हँसते-गाते हल चलाकर लौट आना, उछलते-खेलते काम पूरा कर देना यह मस्तराम की सहज लीला थी।

स्त्री ने कहा—'आज घर में नमक नहीं है।'

मस्तराम बोला—'अलौना भोजन करने से व्रत हो जाता है और बहुत से विष मर जाते हैं।'

स्त्री ने मुँह बिचकाया, बच्चे हँस दिये, बोले—

'पिताजी ! नमक नहीं तो मिठाई मँगा दो।'

मस्तराम ठहाका लगाकर हँसे—'अरे मिठाई तो रोग उत्पन्न करती है। बड़े-बड़े महात्मा मिठाई खाना छोड़ देते हैं। मीठे में बड़े दोष हैं—नहीं-नहीं मिठाई नहीं आयेगी।'

बालकों ने समझ लिया, पिताजी उल्टी-सीधी पट्टी पढ़ाना खूब जानते हैं, पर सन्तोष किया क्योंकि यह धन के अभाव का दुराव था।

मस्तराम हर हाल में प्रसन्न रहता, परमेश्वर को धन्यवाद

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

देता कि जितना उसने दिया है उतनी ही उसकी उदारता है।

घर में कभी अनाज न रहने पर, तो कभी घी, तेल पर झगड़ा होता। किसी न किसी पदार्थ की कमी बनी ही रहती और मस्तराम इस अभाव को हँस कर पूरा कर देता।

स्त्री तंग आगयी थी। बालक दुःखी थे। मस्तराम की हँसी को ओढ़ें या बिछायें। उससे पेट तो नहीं भरता। प्रसन्नता भी पेट भरने पर होती है, पर मस्तराम खाली पेट भी प्रसन्न रह लेता।

सायंकाल का समय था। मस्तरा खेतों से लौटा। उसने हल रख दिया और बैलों को चारा डाला। घर में गया, देखा कि न स्त्री है, न पुत्र, द्वार खुला पड़ा है। दिन भर परिश्रम करके मस्तराम लौटा था। पेट में क्षुधा थी। सोच रहा था, घर जाते ही कुछ खाने को मिलेगा। मस्तराम देहली को लांघता रसोई में पहुँचा। पात्रों को उलट-पुलट कर देखा, सब खाली पड़े थे। एक हांडी में थोड़ासा विरचन (सूखे बेरों का आटा) पड़ा था। मस्तराम ने प्रसन्नतापूर्वक खाने के लिये उठाया ही था कि पीछे से चिमटा बजने का शब्द आया; द्वार की ओर देखा, एक साधु भिक्षा के लिये खड़ा है।

'अलख निरंजन'! बाबा! दो दिन से भोजन नहीं मिला। इस गाँव में कोई दाता ही नहीं है। तेरा नाम सुनकर आया हूँ।'

मस्तराम के मुख पर प्रसन्नता दौड़ गयी। उसने कहा—"बाबा! आ जाओ!"

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

बाबा अन्दर जा बैठे। चिमटा रख दिया। 'हरि ॐ' 'हरि ॐ' की ध्वनि करने लगे।

मस्तराम हँसा, बोला—"बाबा! खाली पेट बहुत न चिल्लाओ। लो, यह थोड़ा-सा विरचन है—फाँक जाओ!"

साधु भूखा था। विरचन खाकर पानी पिया। एक ठण्डी साँस ली—"बेटा, धन्य हो! भगवान् दूना दे। आज तो पेट भर भोजन करा दे।"

मस्तराम रसोई घर में गया। उलटा-पुलटी की। थोड़ा-सा गुड़ रखा था, उठा लाया।

साधु ने खाकर पानी पिया। चिमटा उठाया और आशीर्वाद देता चला गया।

मस्तराम चौपाल में आया। एक टूटीसी खाट पड़ी थी, उसी पर सो रहा। आँख अभी लगी नहीं थी कि स्त्री और बालकों के चिल्लाने और बड़बड़ाने का शब्द सुना।

"सब समेट कर खा लिया! बच्चों के लिये भी कुछ नहीं छोड़ा।"

मस्तराम तो मस्त था ही। पड़ा-पड़ा सुनता रहा—जैसे कुछ न सुन रहा हो। बड़बड़ाती हुई रामो चौपाल में आयी। दोनों हाथ अपने सिर पर दे मारे—"कहाँ तक सबर किया जाय। बालक भूख से बिलबिला रहे हैं। जो कुछ था, तुम खा पी गये। पड़ोसिन के यहां गयी थी, कुछ उधार ले आऊँ। उसने हाथ भी नहीं रखने दिया-दुःख में कौन साथ देता है? तीन-तीन खेत पड़े

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

हैं, एक दाना भी नहीं निकलता। भगवान भी तो रूठ गया है।"

मस्तराम उठ बैठा। स्वभाव के अनुसार हँसा, बोला—"भागवान! क्यों घबड़ाती है? घूरे के भी दिन फिरते हैं। भगवान् ने चाहा तो अबकी फसल अच्छी होगी। चिन्ता मत कर, जा सो जा। कल देखेंगे।"

"और बच्चे।"

"पानी पिला के सुला दे।"

× × ×

गांव में मस्तराम के नाम का डंका बज रहा था। धरती-माता के कण-कण ने मस्तराम को दिया, इतना कि सँभाले नहीं सँभलता था, बांटे नहीं वंटता था। गाँव में कोई भूखा न रहा। साधु, सन्त, भिखारी सबने मनमाँगा पाया।

जलनेवाले मस्तराम के वैभव पर जलते थे। मस्तराम वैसा ही था। प्रातःकाल हल लेकर जाता और सायंकाल आता। रूखा-सूखा खाता, मोटा-झोटा पहनता और भगवान् को धन्यवाद देता—'तूने दिया है तेरे अर्पण है।'

रामो ने कहा—'मेरे हाथों में सोने की चूड़ी नहीं हुई। दुनियां कहती है—मस्तराम के क्या कमी है।' लड़की की करधनी नहीं बनी। मुन्ना फटे-पुराने कपड़े पहनता है। उन्हीं को धोती हूँ और पहना देती हूँ, दूसरी जोड़ी भी नहीं है।'

अपने स्वभाव के अनुसार मस्तराम हँस दिया। रामो भी हँस दी।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

"तुम्हें हँसकर बात टालनी खूब आती है।"

"दो दिन की जिन्दगी में भी क्या रोना।"

"बड़े दातार मत बनो। थोड़ा हाथ खींचो। हमने सारी दुनियां को सुखी बनाने का ठेका नहीं लिया है। मुन्ना को पढ़ने के लिये भेजना चाहिये। कच्चा कुनबा है। कुछ तो बचा कर रखो।'

मस्तराम हँस दिया—'आज जो कुछ है उसमें मस्त रहो कल के लिये परिश्रम करके भगवान् के अर्पण करने में कसर न छोड़ो।'

धरती गहरी जोती थी। बीज अच्छा डाला था। समय पर वर्षा हुई। झम्पा-झूलती खेती लहरा गयी। मोटा दाना हुआ और खूब हुआ।

लोग कहते—"भगवान् की बड़ी मेहर है, मस्तराम की झोली भर दी।"

दूसरे कहते—"भाई, जैसी नीयत वैसी बरकत।'

मुन्ना बड़ा हो गया था। खेत पर जाता और पिता के काम में हाथ बटाता। रिश्ते आने लगे। विवाह निश्चित हुआ। अमीर-गरीब सबके घर गाँव भर में बुलावा लगा। कोई भूखा न गया और कोई खाली हाथ न लौटा। चार मित्रों ने मिलकर काम सम्हाल लिया। रामो और मुन्नी एक क्षण के लिये भी न बैठतीं। घर का बाहर का सब काम देखतीं। मस्तराम अपने में मस्त था उसी पुराने कुरते और धोती में।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

हँसता-बोलता, नाम मात्र को भी उसे घबराहट नहीं थी। क्या होगा ? और कैसे होगा ? इसकी उसने कभी चिन्ता नहीं की।

एक किसान आया। उदास बैठ गया।

मस्तराम ने कहा—"भय्या कुछ खाओ।"

"मैं क्या खाऊँ ? मुझे चिन्ताओं ने खा डाला है।"

मस्तराम हँस दिया।

किसान बोला, "भाई, सब तुम्हारे जैसे नहीं होते।"

"मेरे जैसे हों या तुम्हारे जैसे। परमेश्वर के नियम अटल हैं, उसकी इच्छा पूरी होती है। कोई हँसे या रोये।"

"मुझे अपनी कन्या के हाथ पीले करने हैं। चार दिन में बरात घर आ बैठेगी। नाज-पानी का अब तक प्रबन्ध नहीं हुआ।"

"घबड़ाओ मत चन्दनसिंह ! भगवान् सब ठीक करेगा। देखो, यह भी तो तुम्हारा ही घर है। विवाह की सब तय्यारी पूरी है। बरात यहीं आ जायगी ! क्यों ठीक है न ?"

चन्दन कुछ न बोला।

चार दिन पीछे मस्तराम के यहां से चन्दन की कन्या का विवाह हो गया। मां-बेटे बड़बड़ाते रहे पर मस्तराम के कान पर जूं भी नहीं रेंगी। ठाठ से विवाह हुआ। कन्यादान दिया गया। लड़की की बिदा करके चन्दन चला गया।

रामो और बलवीर ने देखा कि मस्तराम के रहते हुए वे

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

कभी पीछे के लिये दो पैसे बचाकर नहीं रख सकते। बिटिया बड़ी हो रही है। बहू घर आवेगी। इस हाल से वह कैसे सुखी होगी? जवानी में खाने-पहनने की इच्छा होती ही है।

पर क्या करें, दोनों लाचार थे। मस्तराम मस्त था—दोनों हाथों से देता था पर मेहनत करके उपजाता भी था। उससे कौन बोले? फिर कहें भी तो वह सुनता कब था।

आखिर एक दिन रामो बोली—'देखो, अपना चलन सुधारो। समय पर पैसा ही साथ देगा। खानेवाले खाते हैं और चले जाते हैं। कोई किसी के काम नहीं आता। तुम्हें हो क्या गया है?'

मस्तराम हँस दिया—'भगवान् ने दिया है और देगा। उस पर अविश्वास न करो, रामो!' कहते हुए मस्तराम ने हल उठाया और खेतों पर चल दिया।

'बुढ़ापे में देखूँगी हड्डे कैसे चलेंगे?'

काम पर जाते हुए मस्तराम बोला—'रामो, आज का काम हम करें, कल का भगवान् करेगा।'

बहू और बेटे मस्तराम से प्रेरणा पाते थे, परिश्रम करते थे, पर अनुभव की कमी थी। कर्मठ जनों को देख कर मस्तराम की मस्ती दूनी बढ़ जाती थी।

एक दिन उसने सोचा बेटों ने गृहस्थ का भार सँभाल लिया है चलो भारत-दर्शन कर आयें।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

बोला—"रामो, तुम्हारी अनुमति हो तो कुछ दिन के लिये भव्य भारत-भूमि को देख आऊँ।"

रामो प्रसन्न हुई, बोली—"इससे अच्छा और कौन सा अवसर आयेगा, मैं भी साथ चलूंगी।"

"नहीं-नहीं ! तुम यहीं रहो। घर की देख-भाल करना। चार दिन में नई बहू आने को है। मैं जाता हूँ।"

"अभी।"

"और क्या।"

"कल जाना, तैयारी करके।"

"कल तो कभी होती ही नहीं। इच्छा अब हुई है, जाऊँ कल ?"

'बहू को आ जाने दो।'

'मन बदलते देर नहीं लगती।'

'तुम्हारे तो सब काम चटपट होते हैं।'

"समय काम का रस पी जाता है। नीरस कर्म करने से क्या लाभ है रामो ! अच्छा तो लो मैं चलता हूँ।"

× × ×

मस्तराम को गये दो वर्ष बीत गये। उसके वियोग में बैलों ने चरना छोड़ दिया। उन्हें कोई पुचकारनेवाला नहीं था। समय पर पानी देनेवाला नहीं था। धरती रूठ गयी। वह भूखी रहने लगी। उसने अन्न उगलना छोड़ दिया। घर में जो कुछ था, वह जल्दी ही समाप्त हो गया। मस्तराम के द्वार से

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

याचक-भिखारी खाली लौटने लगे। साधु-महात्माओं ने उस रास्ते से जाना छोड़ दिया।

नयी बहू की सास से पटती नहीं थी। रामो बड़ी दुःखी हो गयी। अब उसने मस्तराम का मूल्य जाना।

अज्ञान, अकर्मण्यता और भोग तीनों एक साथ मिलकर मनुष्य की बड़ी दुर्गति करते हैं।

बलवीर इन तीनों के कुचक्र में फँस गया। घर में बर्तन खुड़कने लगे। बाहर हवा बिगड़ गयी। मस्तराम का नाम उसके साथ ही चला गया।

बलवीर ने पहले तो पिता का नाम रखने का प्रयत्न नहीं किया और पीछे वह प्रयत्न करके भी रख नहीं सका।

खेत गिरवी रख दिये गये। कर्ज़े ने रहा-सहा भी खा लिया।

नम्बरदार बोला—"बलवीर ! अब क्या कहते हो ? मुझे तुम्हारे पिता की लाज है। तुमने सब खो दिया।"

बलवीर चुप था। रामो दो वर्ष में बिल्कुल बूढ़ी हो गयी थी। भार से उसके कन्धे झुक गये थे। आँखों ने बुरे दिन देखने से इन्कार कर दिया था और कान कहते थे कि हम रात-दिन की किलकिल नहीं सुनेंगे। पति के बिना पत्नी की जो दुर्दशा होती है, वही रामो की हुई। पर उसका मस्तराम अभी जीवित था। उसे अपने पतिदेव के शब्द याद थे—"रामो घूरे के भी दिन फिरते हैं।"

गाँव के नर-नारी बलवीर की चौपाल को घेरे खड़े थे।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

 Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अन्दर से रामो के रोने की आवाज आ रही थी। बलवीर और उसकी बहूरानी बुरी तरह झिड़क रहे थे—"मर क्यों नहीं जाती। हमारा भी जीवन दुःखी कर दिया।"

लोगों ने समझाया—"बलवीर! इतना अत्याचार न कर। तेरी माँ है।"

बहूरानी तमक कर बोली—"माँ-बाप ने हमारा किया ही क्या है? जब तक यह रहेगी हम सुखी नहीं रह सकते।"

उसी समय एक बूढ़ा आया। बढ़ी हुई डाढ़ी, फटे हुए वस्त्र, नंगे पैर, सिर पर एक दुपल्ली टोपी।

"भीड़ क्यों जोड़ रखी है?"

"बहू-बेटे बुढ़िया को सता रहे हैं।"

"और गाँव तमाशा देख रहा है?"

"और क्या करें भाई? दूसरे के मामले में कौन बोले? मस्तराम ने घर बनाया था, खून पसीना एक करके। बलवीर ने बिगाड़ दिया। बहू की गुलामी करता है और माँ पर जुलम ढाता है।"

"बूढ़ा हँस दिया। बनाने और बिगाड़नेवाला तो भगवान् है। मनुष्य की क्या ताकत है?"

बूढ़े की उमंग भरी मस्त हँसी सुनते ही रामो चौंक पड़ी। दौड़ी हुई बाहर आयी। चरण स्पर्श किये।

"आ गये आप?"

मस्तराम हँस दिया। गाँववाले प्रसन्न हुए। दौड़ता हुआ

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मस्तराम कुएँ पर पहुँचा। पानी भर लाया और सबको पिलाया। मुँह-हाथ धोकर आ बैठा। बात चली। बेटे और बहू ने आकर मस्तराम के चरण छुए।

मस्तराम हँसते-हँसते लोट-पोट होगया। दो बरस पीछे घर में हँसी आयी, दीवारें मुस्करायीं और जीवन के स्वर गूँज गये।

सायंकाल तक आने-जानेवालों का ताँता लगा रहा। कोई अपने दुःख की बात सुनाता तो मस्तराम हँस देता—

"दुःख और सुख मन के माने हुए खेल हैं। खिलाड़ी वह है जो हर खेल को मस्ती से खेलता है। और फिर भय्या भगवान् रखेंगे वैसे ही रहना पड़ेगा। हँसके रहो या रोके। हँसोगे तो वह हँस कर देगा, रोओगे वह मुँह फेर लेगा।"

मस्तराम के बुढ़ापे में जवानी थी। अनुभव से उसने कर्म के साथ धर्म भी पा लिया था। कर्म और धर्म के मिलने पर वैभव, विभूति, श्री और नीति सभी मिलने के लिये उत्सुक रहते हैं।

खेतों के दिन फिरे, धरती ने शृङ्गार किया, स्नेह ने सींचा, रस ने उपहार दिया। सम्पन्नता अन्न का रूप धर कर निकली।

रामो के गये दिन फिर आये बहू-बेटों ने सुख देखा पर मनुष्य को सन्तोष नहीं होता।

रामो ने कहा—"देखना जी! अब जरा सोच-विचार कर चलन से चलना।"

मस्तराम की मस्ती मुस्कराई—"सोच-विचार करना ज्ञानियों

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

का काम है, हम हैं साधारण श्रमजीवी, जो कुछ मिला भगवान् को भोग लगाया और खाया। फिर जोड़ कर करना भी क्या। साथ कुछ जायेगा नहीं। पर तुम कहती हो तो …… ।"

× × ×

रामो को रोग ने घेर लिया। वह मृत्यु शय्या पर पड़ी थी। मस्तराम हँसता हुआ पास पहुँचा। बोला—"रामो, हँसो हँसते-हँसते जाना प्रिय में मिल जाना है। रोता घबराता वह है जो भार से दबा हुआ हो। तुम्हारा भार तो हलका है। फिर भी कुछ साथ ले जाने की इच्छा हो तो……।"

रामो बोली—"कहीं कुछ साथ जाता है ?"

"यहाँ छूटता भी क्या है ? देखो, तुम्हें बड़ी चिन्ता रहती थी—सुख की सामग्री जुटानी चाहिये। मैंने तुम्हारे लिये सोने की चूड़ियाँ बनवा ली हैं। रामो, चार दिन के लिये कोई कहीं जाता है तो आवश्यक सामान साथ ले जाता है। तुम इतनी लम्बी चौड़ी यात्रा में जा रही हो, कुछ साथ न ले जाओगी ? भला बताओ, बिना सामान के वहाँ कैसे रह सकोगी ?"

रामो की आँखों से आँसू टपक पड़े। मस्तराम हँस पड़ा, बोला—"रामो घबराओ नहीं, मैंने तुम्हारे सुख के लिये बहुत कुछ भेज दिया है। जहाँ चाहोगी मिलेगा, इच्छानुसार मिलेगा।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

नेता बनने की योग्यता

जेल के सींखचों के बाहर खड़ी माधुरी के कपोलों पर आंसुओं की बूंदे ढलक आयीं। रामनारायण के मोटे-मोटे हाथ सीखचों से बाहर निकलने का प्रयत्न करने लगे, पर केवल उँगलियां ही बाहर आ सकीं और उन्हीं से उन्होंने माधुरी के आंसू पूंछते हुए कहा—"तुम वीर वधू हो, कोई देखेगा तो क्या कहेगा ?"

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

"आपका कहना ठीक है" माधुरी ने सिसकते हुए कहा, "पर मुनिया विवाह के योग्य हो गई है, महेन्द्र की परीक्षा के दिन आ रहे हैं; फ़ीस भरनी है, कोई बात पूछनेवाला भी नहीं है।"

"घबराओ मत माधुरी ! कभी न कभी हमारा देश स्वतन्त्र होगा।"

"होगा जब होगा ! पर अब मैं क्या करूँ ? अभी तो इक्कीस महीने की सजा काटनी है। तीन महीने ही तो बीते हैं, कुछ जोड़कर रखा नहीं था।"

"समय पूरा हो गया !" सिपाही ने कड़क कर कहा।

आंसू पोंछती हुई माधुरी पीछे को हट गई और एक लम्बा सांस लेकर छोड़ती हुई घर की ओर चल दी, पर रामनारायण ज्यों के त्यों खड़े रहे, दोनों हाथों से खिड़की के मोटे-मोटे सरियों को पकड़े हुए। शायद विचार रहे थे कि पूरा बल लगाकर इन सरियों को तोड़ दूँ, पर वे अपनी असमर्थता जानकर खड़े रह गये, इस आशा में कि किसी दिन ये स्वयं टूट जायेंगे।

× × ×

रामनारायण एक देशभक्त पुरुष थे। साधारण हैसियत थी। ८०) रु० मासिक वेतन पर एक सरकारी दफ्तर में नौकरी करते थे। धर्म में उनकी रुचि थी। नित्य दस-पांच मिनट नियम से पूजा-पाठ करते थे। बात के पक्के और चरित्रवान् थे।

एक दिन उनके नगर में किसी कांग्रेसी नेता का भाषण हुआ। उसने दहाड़-दहाड़ कर कहा—"स्वतन्त्रता जीवन है, पराधीनता

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मृत्यु है। मौत के पंजों से छूटकर सुखी और समुन्नत होने के लिये हमें तन, मन और धन अर्पण करके स्वराज्य हासिल करना चाहिये। वह पुत्र कैसा जो माता के संकट न काट सके ? आओ हम भारत माता का दुःख दूर करने के लिये प्राणों की आहुति दें !"

'भारत माता की जय' के नारों से आकाश गूँज उठा! रामनारायण के गले में फूलों की मालाएँ पड़ने लगीं। वह झंडा लेकर आगे-आगे चला और जन-समाज उसके पीछे-पीछे हो लिया।

रामनारायण दफ्तर से सीधा घर जाया करता था। उसके घर में उसकी धर्मपत्नी थी, एक पुत्री और एक पुत्र। सायंकाल ७ बजे प्रायः सब बैठकर एक साथ भोजन करते थे। ७ बजे, ८ बजे और फिर ९ बजे। समय किसी का दुःख-सुख नहीं देखता और न किसी के लिये ठहरता। रामनारायण घर नहीं पहुँचा। माधुरी ने महेन्द्र को उसे खोजने भेजा। लगभग दस बजे महेन्द्र दौड़ता हुआ आया—

"माँ ! पिता जी गिरफ्तार हो गये।"

"गिरफ्तार ?"

"हां, कांग्रेस का झंडा लेकर चले थे।"

एकाएक यह सब कैसे हुआ; माधुरी न समझ सकी।

रामनारायण की नौकरी छूट गई. उसे दो वर्ष का कारावास हुआ।

माधुरी ने जैसे-तैसे तीन महीने बिताये। स्कूल की फ़ीस, घर का व्यय, रोटी, पानी, कपड़ा वह कहां से लाये ? वह रामनारायण

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

से जेल में मिलने गयी, पर वह बेचारा भी क्या कहता ? नेताओं की प्रचण्ड वाणी रूप आग पर चढ़कर उसके हृदय में एकाएक उबाल आगया था।

कांग्रेस के दफ्तर में जाकर महेन्द्र ने रो-रोकर अपना दुःख सुनाया। प्रधान थे, मन्त्री थे और एक सदस्य भी बैठे थे। हँसकर बोले—

"बेटा ! बलिदान के बिना देश के संकट नहीं कटेंगे। तुम जैसे न जानें कितने नौजवानों की कुरबानी पाकर स्वतन्त्रता की देवी प्रसन्न होगी।"

"मेरा एक वर्ष व्यर्थ चला जायगा, इतना तो प्रबन्ध कर दीजिये कि मैं परीक्षा की फीस जमा कर दूँ।"

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रधान जी ने आंखें घुमाईं—"कोई दूसरा रास्ता देखो !"

महेन्द्र की व्यथा का उन पर उड़द की सफेदी के बराबर भी असर नहीं पड़ा।

हार कर महेन्द्र ने सत्याग्रही स्वयंसेवकों में अपना नाम लिखा दिया। परन्तु उसके पास न खादी का कुड़ता था और न गांधी टोपी। वह वहां से भी निकाला गया।

मन्त्री जी ने पूछा—'नौकरी करोगे ?"

"जी हां।"

"घर का सब काम करना पड़ेगा ?"

"मैं एक भले घर का बालक हूँ।"

"भला और बुरा क्या ! परिश्रम किये बिना कौन कुछ देगा ?"

"परिश्रम तो करूँगा पर मेरे योग्य काम······।"

"योग्य-अयोग्य काम का विचार करनेवाला नौकरी नहीं कर सकता—भाग जा !"

"मन्त्री जी ! मैं विपत्ति में पड़ गया हूँ। पिता जी एकाएक जेल चले गये। हमारे पास कोई खाने-पहिनने का साधन नहीं है। घर में मां है और एक बहिन।"

"सबको नौकरी करनी चाहिये।"

महेन्द्र सहम-सा गया। उसने कहा—

"जी मुझे तो नौकरी दीजिये। आगे फिर देखी जायेगी।"

महेन्द्र सचाई के वातावरण में पला था प्रपंचों और छल-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

कपट का उसे ज्ञान नहीं था। भारतमाता की मुक्ति के लिये उसने छोटे-से-छोटा काम करना भी स्वीकार किया।

कपड़े धोते-धोते उसने देखा कि मन्त्री जी के घर में पहिनने के कपड़े खादी के नहीं थे। वह बाजार से सौदा लेने जाता तो प्रायः मन्त्री जी उसे विदेशी वस्तुएँ ही दिलाया करते। वह कभी कुछ बोलता तो कहते—"नया पुजारी राम-राम ही पुकारता है; अभी तू बालक है, इतनी आगे की बात समझने की कोशिश न कर!"

एक दिन महेन्द्र ने देखा कि किसी व्यापारी का विदेशी माल पकड़ा गया। स्वयंसेवकों ने धरना धर दिया। उन्हें पीटा गया, घसीटा गया, परन्तु सत्याग्रह चलता रहा। व्यापारी चिन्ता में पड़ गया। वह मन्त्री जी से मिलने आया। एकान्त में बैठकर कुछ बातचीत हुई।

प्रातःकाल मन्त्री जी गोदाम पर पहुँचे। स्वयंसेवक सत्याग्रह कर रहे थे। मन्त्री जी ने कड़क कर कहा—

"तुम्हें यहाँ सत्याग्रह करने के लिये किसने आदेश दिया था? इस गोदाम में विदेशी माल नहीं है।"

गोदाम खोला गया। उसमें एक भी विदेशी गांठ कपड़े की नहीं थी।

महेन्द्र ने कहा—"मन्त्री जी! रात को आपने ही तो सारा माल निकलवाया था।"

"खबरदार मूर्ख! बिना सोचे-समझे व्यर्थ बोलता है।"

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मार-पीटकर महेन्द्र को निकाल दिया गया। वह कुछ भी नहीं समझ पाया। धीरे-धीरे देखते-देखते समझते-समझते उसे परिस्थिति का ज्ञान हो गया। उसने घर जाकर मां से कहा—

"मां, मैं पक्का कांग्रेसी बन गया हूँ। मेरा कहना मान बहिन को कम्यूनिस्ट पार्टी में भेज दे, तू समाजवादी दल में सम्मिलित हो जा और मैं कांग्रेस का नेता बनूंगा।"

"नेता।"

"हाँ! हाँ! नेता!!"

"पहले स्वयंसेवक तो बन!"

"माँ, स्वयंसेवक बनना कठिन है, नेता बनना आसान है। सच मान मैंने नेता बनने की योग्यता प्राप्त कर ली है।"

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जेलयात्रा से लौट कर रामनारायण ने देखा कि उनका घर सेवा का धाम बना हुआ है। मन ही मन उन्होंने परमेश्वर को धन्यवाद दिया। वे फूले नहीं समाते थे कि उनका बलिदान रंग लाया। पर कुछ ही दिनों में उन्होंने देखा कि न उनका बेटा, बेटा रहा है, न बहू, बहू और न बेटी, बेटी—सब नेता बनने की धुन में हैं।

एक दिन रामनारायण ने कहा—"महेन्द्र! यह सब क्या है? इन प्रपंचों से स्वराज्य मिलेगा?"

"पिताजी! आप नहीं जानते। समय बदल गया है। सत्य, अहिंसा, सेवा और त्याग की ऊपरी आवश्यक है—भीतरी नहीं। इन प्रपंचों के बिना हम भूखे मर गये होते।"

"मुझे भूखे मरना स्वीकार है।"

"तो आप मरिये मैं तो नेता बनूंगा।"

रामनारायण ने अपना जीवन देश की सेवा में लगाया। पर महेन्द्र-जैसे व्यक्ति थे जो बाधक बनकर बीच में खड़े हो जाते।

जैसे-तैसे लम्बी लड़ाई के पश्चात् स्वराज्य मिला। रामनारायण ने देखा कि महेन्द्र स्थान-स्थान पर झंडे फहरा रहा है, दावतें हो रही हैं और उत्सव मनाये जा रहे हैं।

तीन वर्ष इसी प्रकार निकल गये। देश के दुःख और भी अधिक बढ़ गये। रामनारायण जैसे सच्चे व्यक्ति प्रयत्न कर करके हार गये। नेता और पदाधिकारी बननेवाले महेन्द्रों की देश में बाढ़ आगयी थी। उसमें जनता का सुख, राष्ट्र की सम्पत्ति, उन्नति

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

की योजनायें, चरित्र का विकास आदि सुरक्षित नहीं रह सके। रामनारायण-जैसे व्यक्ति भी उस बाढ़ को रोकने में असमर्थ रहे।

× × ×

बूढ़े रामनारायण मृत्यु शय्या पर थे। देश में उसका मान था। बड़े-बड़े व्यक्ति उनसे मिलने आये। योग्य से योग्य चिकित्सकों ने उनकी देखभाल की। रामनारायण की बेचैनी बढ़ रही थी। सामने से महेन्द्र आया। उसने प्रणाम किया। रामनारायण के रक्त का दौरा रुकता-सा जान पड़ा, आंखें निकलने लगीं, मुंह लाल हो गया। सारा बल समेट कर वे उठ बैठे और बोले—

"जब तक महेन्द्र-जैसे नेता हैं, राष्ट्र कभी सुखी और सम्पन्न नहीं हो सकता।"

महेन्द्र मुख नीचे करके बोला—

"पिताजी ! जो आपके आस-पास बैठे हुए हैं, ये ही सब मेरे गुरु हैं; इन्हीं के चरणों में बैठकर मैंने कुछ सीखा है।"

रामनारायण धड़ाम से पलंग पर गिर गये—'बाढ़ ही खेत को खा रही है', कहकर वे सदा के लिये मौन हो गये।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

दिन-दिन दूना होय

प्रातःकाल से सायंकाल तक घोर परिश्रम करके धनीराम को दो पैसे मिलते। उन्हें लेकर जब वह अपनी धर्मपत्नी लक्ष्मी के पास पहुंचता तो लक्ष्मी चुप रह जाती पर आंखों ही आंखों में व्यथा की कथा कह देती।

धनीराम कहता—'लक्ष्मी ! जो प्रभु देता है उतने में सन्तोष करना चाहिये। अच्छे दिन आयेंगे अधिक मिलेगा।'

लक्ष्मी ठण्डी सांस लेती—'क्या खाऊँ और क्या बच्चों को खिलाऊँ ?'

दिन बीतते देर नहीं लगती। सुख के दिन हों या दुःख के धीरे-धीरे निकल जाते हैं। धनीराम के बालक युवा हुए। पाठशाला से विद्यालय में पहुंचे पर धनीराम के पास पढ़ाने को पैसा कहां था ? वह जी तोड़ परिश्रम करता पर कभी वांच्छित धन न कमा पाता।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

धनीराम की बड़ी पुत्री सुखदेई के यौवन ने अँगड़ाई ली। माता-पिता को उसके हाथ पीले करने की चिन्ता हुई। दरिद्री की कन्या का हाथ कौन पकड़े ! समाज धन का कीड़ा है।

सुखदेई रूपवती थी और फिर यौवन ने उसके रूप को दूना उभार दिया। अड़ोसी-पड़ोसी मन बहलाने के लिये सुखदेई से किसी-न-किसी बहाने बात करते। सुखदेई अपने गुण और शील से किसी को भाई, किसी को चाचा किसी को मामा, ताऊ कहकर नारी-सुलभ लज्जा से अपना पीछा छुड़ाती। उसके रूप और गुण के प्रशंसक तो थे पर एक दरिद्री की कन्या को अपनी पुत्रवधू बनाने के लिये कोई तय्यार नहीं होता था।

हार कर धनीराम ने अपने पूर्वजों की दैन बेच देने का निश्चय किया। लक्ष्मी सहमत नहीं थी। पूर्वजों की पुण्य स्मृति को धूल में मिलाकर क्या वह सुखदेई को सुख दे सकेगी ?

नहीं-नहीं वह अपने गोबर मिट्टी से लिपे उस छोटे-से आश्रय को कदापि नहीं जाने देगी।

लक्ष्मी ने सुखदेई को कल्लू कागज़ी की दूकान पर भेजा। बरू का एक बण्डल वह कन्धे पर धर कर घर लाई। भाई, बहिन और मां तीनों ने मिलकर रात में नर्सलों को चाकू से साफ किया। उनका खुरदरापन दूर करते-करते लक्ष्मी के कोमल कर खुरदरे हो गये।

प्रातःकाल सुखदेई उन्हें लेकर कल्लू कागज़ी की दूकान पर गयी। कल्लू ने अपने सेवक भोंदू से कहा—'अरे ! देखियो, सब

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

साफ हो गये ?

भोंदू ने एक-एक कलम उठाकर देखी और सुखदेई को भी जी भर देखा। वेचारी नीची दृष्टि किये बैठी रही। भोंदू बड़बड़ाने लगा—'लालाजी चाहें जिसे काम दे देते हैं मेहनत हमें करनी पड़ती है। देख री छोरी ! आज तो मैं रख लेता हूँ पर कल ऐसी कलमें नहीं लूंगा और फिर वह सुक्खो की ओर ललचाई आंखों से देखकर मुस्कराया—'चल, पैसे दिलाऊँ।'

गिने गिनाये आठ पैसे और भोंदू के एहसान का भार लेकर सुक्खो घर आयी, मां के हाथ पर पैसे रख दिये।

'रात भर का परिश्रम ?' लक्ष्मी ने सुक्खो की आंखों में आंखें गड़ाकर कहा।

'इतने भी भोंदू की सिफारिश से मिले हैं मां ! कल भय्या को भेजना।'

दिनभर में मां-वेटी ने नर्सल तय्यार कर ये और सायंकाल जब कुबेरसिंह विद्यालय से आया तो मां ने उसे बण्डल देकर कल्लू की दुकान पर भेजा।

भोंदू ने देखते ही नाक-भौंह सिकोड़ी, दो-चार खरी-खोटी सुनायी और बोला—'दिन भर में सैकड़ों छीलनेवाले आते हैं किस-किस को काम दूँ ?'

कल्लू ने चार पैसे फैंकते हुए कहा—'ले जा और अब मत आइयो।'

× × ×

मकान रहन रखा गया। कुबेरसिंह को विद्यालय छोड़ना

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पड़ा परिश्रम करते-करते थक कर लक्ष्मी मांदी पड़ गयी और एक दिन व्याकुल होकर उसके प्राण पखेरू उड़ गये।

× × ×

समाज का वार्षिक अधिवेशन हो रहा था। महात्मा और परिव्राजकाचार्य एड़ी से चोटी तक हिल-हिल कर मंच पर उछलते-कूदते व्याख्यान दे रहे थे—'गरीबों को गले से लगाओ ! सेवा परम धर्म है ! प्रभु की सृष्टि में कोई छोटा-बड़ा नहीं है। लक्ष्मी किसकी रही है और किसकी रहेगी ?'

धनीराम दौड़कर मंच पर पहुँचा। उसने स्वामीजी के पैर पकड़ लिये।

'स्वामी जी ! लक्ष्मी मुझे छोड़ गयी। मैं दुखी हूँ, दरिद्री हूँ आपसे मुझे आश्वासन मिला है। आप गुरु हैं, पथ-प्रदर्शक हैं।

'हटो हटो, मुझे व्याख्यान देने दो। इतने श्रोताओं के आनन्द में तूने बाधा डालदी !'

'स्वामी जी ! मैं अब आप के चरण नहीं छोड़ूँगा।'

'हटाओ इसे—पागल है, ज्ञान की बातें सुनने नहीं देता'—श्रोता पुकार उठे।

धनीराम खड़ा हो गया श्रोताओं की ओर अभिमुख हुआ और फूट पड़ा—'यह समाज धोखे की टट्टी ! मेरी लक्ष्मी छीन ली, सुक्खो पर कुदृष्टि डाली, कुबेर को अनाथ कर दिया, परिश्रम को पानी में बहा दिया—स्वार्थी समाज ! छली और डाकू समाज मुख से सेवा की बात कहता है और सेवा करने में श्रोताओं का

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

आनन्द भंग होता है। दुनियां को बहकानेवालो ! भूले भाइयो ! मैं पागल नहीं हूँ, मेरी दरिद्रता से लाभ उठाकर तुम मुझे पागल बना रहे हो ! वह दिन दूर नहीं कि ईंट से ईंट बज जायेगी। तुम्हारी ये गगनचुम्बी अट्टालिकायें धूल में मिल जायेंगी। धर्म के नाम पर धोखा देनेवालो ! तुम्हारा ऐश्वर्य ही तुम्हारे विध्वंस का कारण बनेगा। मैं पागल सही, लो यह मेरी कन्या सुक्खो है और यह कुबेर मेरा बेटा ! समाज की वेदी पर मैं इनकी बलि देता हूँ। कोई है धर्म का ठेकेदार ? जो इनका हाथ पकड़े।'

धनीराम मंच से कूदकर दौड़ता हुआ एक ओर निकल गया श्रोताओं ने तालियां बजायीं। पागल ! पागल ! के घोष से आकाश गूंज गया और उस गड़गड़ाहट तथा कठोर घोष के आघात से सुक्खो तथा कुबेर व्याकुल होकर गिर पड़े।

× × ×

लाहौर धधक रहा था। जान और माल को अग्नि की जिह्वायें चाट रही थीं। स्वार्थों और क्रूरताओं के पुतले खुल कर खेल रहे थे।

स्वामी जी के आश्रम को गुण्डों ने घेर लिया सीढ़ी लगाकर कुछ व्यक्ति अन्दर उतरे। दरवाजा खुला और सैकड़ों लुटेरे घुस गये। लूटमार और हिंसा के बीच में एक व्यक्ति आ कूदा— निर्भीक और साहसी। 'भागो भागो, पुलिस ! फौज !'

भगदड़ पड़ गयी उस वीर ने भीतर से द्वार बन्द किया आहतों की परिचर्या में लग गया।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

'कौन ? स्वामी जी !'

'अरे ! पागल तू यहां भी आ पहुँचा। तू ही इस काण्ड की पृष्ठभूमि में है ? ठहर...'

फौज अन्दर आयी और धनीराम के हाथों में हथकड़ी लगाकर ले गयी।

लारी चलने को ही थी कि एक युवक और एक युवती छज्जे पर से कूदे—'पिताजी ! पिताजी !'

धनीराम ने कुछ सुना नहीं। वह इस उलटी माया को देखकर चकित था—प्रभु की इच्छा।

धनीराम को जेल भेजने का फैसला हुआ। उसी समय सुक्खो और कुबेर ने रो रोकर अधिकारी को अपनी कथा सुनायी

'तो यह तुम्हें बचाने के लिये आश्रम में घुसा था ?'

'जी हां, ये हमारे पिता हैं।

'नहीं नहीं, कौन पिता और कौन पुत्र' मुझे जेल जाने दो, सुख से रहूँगा, कपटी दुनियां से दूर।

'पिताजी ! सुक्खो तो मेरा नाम रक्खा है फिर मुझे छोड़ते क्यों हैं ?'

'बेटा ? मैं इस समाज में रहने योग्य नहीं।'

अधिकारी ने धनीराम को मुक्त कर दिया और तीनों को फौजी लारी में बैठाकर भारत में सुरक्षित पहुँचाया।

लाहौर से निकलते हुए धनीराम ने देखा कि आश्रम जल रहा था। वह चीखा पुकारा पर लारी के पहियों ने कर्त्तव्य-पालन

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

किया और क्षणभर में धनीराम को धधकती आग से आगे निकाल दिया।

कुबेर ने कहा—'हम दोनों आप के वियोग में रो-रोकर अधमरे होगये। धक्का देकर हमें सभा से निकाल दिया गया हम अपने घर गये। देखा कि हमारे सामान की बोली लग रही है। साहूकार ने अपना रुपया वसूल करने के लिये मकान नीलाम करा दिया। हम कहीं के न रहे, जिसके पास जाते, वह हमें भाई-बहन न मानकर सन्देह की दृष्टि से देखता। कोई व्यंग करते और कोई सुक्खो को नौकरी देने का लोभ दिखाते।'

'फिर क्या हुआ बेटा!'

'एक दिन की बात है गीता की कथा हो रही थी। हम दोनों बैठ गये। पण्डितजी की वाणी से हमें सान्त्वना मिली—'सुख दुःखे समे कृत्वा' का सन्देश हृदय में बैठ गया। निराशा, मलिनता और दुःखों को छोड़कर कर्म करो—प्रभु को साथ लेकर; अवश्य ही दीनबन्धु दया करेंगे।'

कथा समाप्त होने पर हम दोनों आगे बढ़े। पण्डित जी के चरण स्पर्श करने के लिये झुके। पण्डित जी ने अधपर से मुझे उठाया और सिर तथा पीठ पर हाथ फेरा। उस समय की शान्ति अब तक फिर नहीं मिली है।'

मैंने कहा—'मैं एक अनाथ हूँ। यह मेरी बहिन है।'

'कहाँ रहते हो तुम?'

'हम बे घरबार हैं।'

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

'प्रभु तुम्हारी रक्षा करे !'

'पण्डित जी हमें अपनी सेवा में रख लीजिये।'

'बेटा ! मैं दिल्ली रहता हूँ और फिर सेवक तो मैं स्वयं ही हूँ। प्रभु की सेवा करने से कल्याण होगा।'

'पेट नहीं मानता।'

स्वामी जी पास ही बैठे थे। पण्डित जी ने कहा—'इन्हें आप अपने आश्रम में रख लीजिये। शरमा शरमी स्वामी जी हमें लाहौर ले गये, आश्रम में हमें बर्तन मांजने का काम दिया गया। मैंने कहा—मैं पढ़ा-लिखा हूँ।' स्वामी जी ने रूखा सा उत्तर दिया—'रहना है रहो नहीं तो वह रास्ता है।'

दो रूखे टुकड़ों के लिये मैंने रहना स्वीकार किया। धीरे-धीरे सुक्खो पर स्वामी जी की दृष्टि गड़ने लगी। मैं और सुक्खो सावधान हो गये। मुझे राह का रोड़ा जानकर स्वामी जी मेरे प्रति कठोर हुए। मुझे मार खानी पड़ी पर मैंने स्पष्ट कह दिया कि सुक्खो और मैं साथ-साथ ही काम करेंगे।

तीन दिन हमें भोजन नहीं दिया गया। चौथे दिन हमारे हृदय की आग बाहर लग गयी। आश्रम लुट रहा था। न जाने कहां से प्रभु ने आपको भेज दिया। फौज ने आपको कैद किया और इस बहाने प्रभु ने हमें नरक से निकाला।

'परमेश्वर की लीला कौन जानता है बेटा ! चलो अब दिल्ली चलकर उन्हीं पण्डित जी को ढूंढें।'

× × ×

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

 Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

एक छोटा-सा कार्यालय—टूटे-फूटे सामान से भरा। धनीराम की आशा टूट गयी। कुबेर ने पण्डित जी के चरण-स्पर्श किये

'आगये तुम ? अच्छे तो हो ? बड़े सुशील हो दोनों।'

पण्डित जी ये मेरे पिता हैं। आपकी कृपा से हम अनाथ से सनाथ हुए। आपकी शरण आये हैं, छोड़ेंगे नहीं।'

'हाँ हाँ यहां रहो। जो कुछ रूखा-सूखा है…।'

'नहीं नहीं, हम आपको कष्ट नहीं देंगे।' धनीराम ने कहा।

'इसमें कष्ट क्या ? मेरा परिवार भी तो खाता है। प्रभु ने तीन व्यक्ति और बढ़ा दिये, उसकी कितनी दया है !'

दस दिन बीत गये। छोटे से स्थान में धनीराम को महलों से भी अधिक सुख मिला। रूखा-सूखा भोजन अमृत-जैसा लगता पण्डित जी की दिनचर्या देख कर तीनों हैरान थे। वे जब सोते तब तक पण्डित जी काम करते और जब उठते तो फिर उन्हें कार्य में संलग्न देखते। परिश्रम की कमाई, सादा रहन-सहन, विशुद्ध विचार। धनीराम ने दुबारा जीवन पाया। वह भी परिश्रम में पण्डित जी का साथ देने लगा।

बातों ही बातों में एक दिन उसने पूछा—'पण्डित जी एक शंका है।'

'कहो ना !'

'प्रभु परिश्रम करने पर पूरा देता है ?'

'अवश्य।'

'पर मुझे तो परिश्रम से चौथाई भी नहीं मिलता।'

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

'किसी कर्म का भोग होगा। आओ तुम्हारा हाथ देखूं।'

'धनीराम ! तुम हो तो धनी पर सारे जन्म में तुम्हें पचास रुपये मिलने हैं।'

'तो एक साथ क्यों नहीं मिल जाते ?'

'फिर जीवन भर क्या करोगे ?'

'एक बार सुख भोगकर परलोक जाने में मुझे दुःख नहीं होगा।'

'तो लो यह साधन है...........।'

धनीराम ने अनुष्ठान आरम्भ किया। दूसरे ही दिन उसे पचास रुपये पारिश्रमिक मिला। पचास रुपये की गीताएँ लेकर उसने बांट दीं और सुक्खो तथा कुबेर को अपने सन्मुख बैठा कर कहा—

'बेटा ! आज मैंने प्रथम और अन्तिम बार इतना धन देखा है ! मैंने अपने भाग्य का पूरा पा लिया। इस शरीर के भोग पूरे होगये। तुम सुख से रहो।'

सुक्खो ने चीत्कार किया और कुबेर फूट-फूट कर रोने लगा।

'क्या हुआ ?' पण्डित जी ने पूजा-गृह से निकल कर पूछा।

रोते-रोते कुबेर ने सब सुना दिया।

'बस इतनी सी बात है ! धनीराम आज तू सच्चा धनी हुआ ! अभी तुझे तो कुछ मिला ही नहीं ! फिर परिश्रम कर !'

साहस बटोर कर धनीराम काम पर गया और सायंकाल फिर पचास रुपये लेकर आया। उसने फिर धर्म ग्रन्थ लिये और बांट दिये।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

महीनों तक यही क्रम चलता रहा, धनीराम नित्य पचास रुपये लाता और पुण्य कार्यों में लगा देता। एक दिन फिर उसने पूछा—'पण्डित जी। आप तो कहते थे कि तेरे भाग्य में कुल पचास रुपये हैं ?'

'मैं अब भी यही कहता हूँ।'

'पर मुझे तो प्रति दिन पचास रुपये मिल जाते हैं ?'

'तुम उन्हें अपने पास रखते कब हो, यदि रख लो तो फिर न मिलें।'

'यह क्रम कब तक चलेगा ?'

'जब तक तुम चलाओगे। अब तुम्हें उनके भाग्य का भी मिलेगा जिनकी सेवा में तुम अपनी गाढ़ी कमाई का धन लगाते हो।'

× × ×

सुक्खो का धूम-धाम से विवाह हुआ कुबेर ने परिश्रम करके डाक्टरी की परीक्षा पास कर ली। धनीराम पूजा-पाठ करके अपने घर से निकलता, जो कमा कर लाता उसे सेवा कार्यों में लगा देता और दिन दूना पाता।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

माया जाल

लगभग रात्रि के तीन बजे होंगे। किसी ने मेरे माथे पर हा[थ] रखा और फिर धीरे-धीरे वह हाथ मेरा शरीर सुलसुला[ने] लगा।

एक अपरिचित स्थान पर रात्रि के अंधकार में इस घटना [ने] मुझे सशंकित कर दिया।

मैंने अर्ध-उन्मीलित नेत्रों से देखने का प्रयत्न किया। [उस] कमरे में मैं अकेली सो रही थी। पूरी शक्ति लगाकर मैंने [उस] हाथ को हटाना चाहा परन्तु मेरे हाथ भारी पड़ गये और [अब] वह हाथ मुझे हिलाने भी लगा।

मैंने बोलने का प्रयत्न किया पर मुंह नहीं खुलता था। [मन] ही-मन मैंने संकटमोचन हनुमान का स्मरण किया। भूत, प्रे[त]

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

बाधा निवारणार्थ प्रार्थना की, प्रसाद बोला पर वह हाथ और भी वेग से मुझे हिलाने लगा। मेरा धीरज टूट गया। भय ने मुझे बेसुध-सा कर दिया।

प्रातःकाल चेत होने पर मैंने उस कमरे में एक वैद्य जी और दो स्वयंसेवकों को देखा—जो मेरी परिचर्या में संलग्न थे।

वैद्य जी ने प्रश्न किया—'अब तो आप स्वस्थ हैं ना ?'

'मैं अस्वस्थ थी कब ?' मैंने कहा।

'आज रात्रि को आप जोर से चौंकी थीं और तब से बेसुध हैं'—एक स्वयंसेवक ने कहा।

स्वप्न की भांति मुझे सारी घटना याद आगयी। मैंने निश्चय किया कि शीघ्र से शीघ्र मुझे यह स्थान छोड़ देना चाहिए।

एक महिला ने मुझे आश्वासन दिया—'तुम अत्यन्त पवित्र और सुरक्षित तपोभूमि में हो। स्वामी जी के इस आश्रम में आनेवाले नर-नारी वांछित वरदान पाते हैं। यहां जो दुःखी आते हैं वे सुखी होकर लौटते हैं, आर्त्तजनों के संकट कट जाते हैं। जिज्ञासु की जिज्ञासा पूरी होती है, ज्ञानीजन ब्रह्मानन्द का अनुभव करते हैं।'

'मैं न अर्थार्थी हूँ, न आर्त, न जिज्ञासु और न ज्ञानी।'

'आपका यहाँ आना कैसे हुआ ?'

'निष्काम भाव से, स्वामीजी के दर्शनार्थ।'

'निष्काम भाव से! यह कौन सा शब्द है ? इसका क्या अभिप्राय है ? यहाँ तो ऐसा शब्द कोई नहीं बोलता।'

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

'मेरा मतलब है कि मैं यहाँ किसी कामना से नहीं आयी हूँ।

'बहिन ! क्यों हमें बहकाती हो ? कामना न हो तो कोई घर से न निकले। कामना है, इसीलिये स्वामी जी हैं, यह आश्रम है और सारे वैभव हैं।'

'तो आपने गीता नहीं पढ़ी ?'

'पढ़ना-लिखना पण्डितों का काम है। हमने तो इतना पढ़ा है कि स्वामी जी ब्रह्मरूप हैं, उनके दर्शन करो ! उनका आशीर्वाद लो और सुख से रहो ! तुम स्वामीजी को अपना गुरु बना लो !'

'मेरे गुरु हैं'—मैंने रूखे और तीक्ष्ण स्वर में कहा।

'कौन हैं ? कैसे हैं ?'

'बड़े विद्वान् हैं, अद्भुत व्याख्याता और लेखक।'

'उन्होंने घर बार छोड़ा है या नहीं ?'

'नहीं।'

'जिसके स्त्री-पुत्र, धन-धाम है, वह अपनों को छोड़ कर दूसरों को नहीं अपना सकता ?'

मैंने आश्चर्य से कहा—जिसने सब कुछ छोड़ दिया, उसे पर धन, पर स्त्री से क्या प्रयोजन है। अपनों को छोड़कर दूसरों की ओर देखने का नाम संन्यास नहीं है।'

मेरी बात सुन कर वह महिला खिसिया गई और उत्तेजित हो कहने लगी—'जान पड़ता है तुम आर्यसमाजी हो।'

मैंने कहा—'बहिन ! मैं आर्यसमाज, सनातनधर्म में कोई भेद नहीं देखती। मनुष्यता जहां है वहीं धर्म है।'

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

बीच में ही मेरी बात काटकर वह बोली—'अच्छा, आज तुम यहां और रहो, कल जो कुछ देखोगी उससे स्वयं रास्ते पर आ जाओगी।'

दिन इधर-उधर नगर में घूमकर काटा। रात्रि को भोजन के उपरान्त मैं अपने कमरे में आकर सोयी कि पिछली रात की स्मृति मेरे सन्मुख खड़ी हो गई। मैंने सावधानी से सब दरवाजे बन्द कर दिये, केवल खिड़कियां खुली छोड़ दी। भगवान् का स्मरण करते-करते सो गयी। साधारण-सी आहट होने पर भी मैं चौंक कर देखती थी।

घंटे ने दो बजाये। मेरे द्वार के किवाड़ हिले। बचपन से ही मुझे साहस और परमेश्वर में विश्वास की शिक्षा मिली है। मैंने बक्से में से कटार निकाली और द्वार के पास खड़ी हो गई।

द्वार फिर हिला। बाहर कोई हाथ से उसे खटखटा रहा था, प्रयास में असफल होकर वह लौट गया।

कुछ समय तक कोई आहट न सुन पड़ी। घंटे ने टन-टन-टन तीन बजाये। मैं संकल्प विकल्प करती हुई पुनः लेट गयी। दो चार मिनट के पश्चात् खिड़की में से उस महिला ने मुझे पुकारा—'बहिन उठो! यही समय है।'

'कैसा समय?'

'गुरुदेव के ऐश्वर्य-दर्शन का।'

'मुझे तंग न करिये।'

'एक बार कष्ट उठा लोगी तो जीवन भर के लिये कष्टों से

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

छूट जाओगी। उठो मेरे साथ आओ !!'

मैंने विचार किया, चलो यह भी देखें ! गुरुओं के ऐश्वर्य का परिचय मुझे पर्याप्त मिल चुका था। धर्म में रुचि होने के कारण मैं मठ-मन्दिरों, आश्रमों और तीर्थों में भ्रमण करती रहती हूँ प्राय:गुरुजन मेरी ओर आकर्षित हो जाते हैं और मुझे शिष्या बनाने का आग्रह करते हैं, कभी-कभी तो पीछा छुड़ाना कठिन हो जाता है। एक ही ऐसे व्यक्ति मिले, जिन्होंने कहा—'तुम स्वयं अपनी गुरु बन जाओ तभी सच्चा सुख और ज्ञान मिलेगा।' मैंने मन ही मन उन्हें गुरु मान लिया वे मानें या न मानें।

महिला आगे आगे चल रही थी वेग और उत्साह से। चन्द्रमा की चांदनी भूमि पर बिखर रही थी, उस प्रकाश में मार्ग के किनारे-किनारे बीसियों नर-नारी पड़े हुए साष्टांग प्रणाम कर रहे थे। मुझे आश्चर्य हुआ—ये इस प्रकार क्यों पड़े हैं ?

गुरुदेव की प्रतीक्षा में !'

'इस समय ?'

'गुरु के दर्शन और चरण-रज प्राप्त करने का यही समय है और सुनो, ये सब प्रतीक्षा में पड़े ही रहेंगे, गुरुदेव इनकी ओर देखेंगे भी नहीं—तुम कितनी सौभाग्यशालिनी हो ?'

भक्तजनों की उस कतार को पार करते हुए हम आश्रम के सिंहद्वार पर पहुंच गये। यहां द्वितीय श्रेणी के भक्त पुष्पमालायें लिये खड़े थे। गुरुदेव की कुटिया के बाहर प्रथम श्रेणी के भक्त थे—बड़े-बड़े सेठ-साहूकार सब प्रकार सम्पन्न

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

और खाते-पीते। मुझे वह महिला कुटिया में ले गयी। पद्मासन पर गुरुदेव विराजमान थे। ऊँचा शरीर, हृष्ट-पुष्ट अत्यन्त सुन्दर, गौर वर्ण।

महिला ने साष्टांग प्रणाम किया, हाथों से चरण-स्पर्श करके चरणों पर मस्तक रख दिया।

गुरुदेव मौन थे। महिला उठी और हाथ के संकेत से मुझे भी उसी प्रकार करने के लिये कहा। मैं असमंजस में पड़ गयी— स्त्री पर-पुरुष के चरण कैसे छुए ?

गुरुदेव उठे, आगे चले, घण्टे-घड़ियाल बजे, पुष्पों की वर्षा होने लगी, पड़े हुए नर-नारियों ने हाथ बढ़ाकर चरणस्पर्श किया और चरण-रज पर माथा रगड़ा। आश्रम से यमुना तट तक चरण छूनेवालों की लम्बी कतार थी।

'देखा तुमने ! एक तुम हो कि अवसर खो दिया ! गुरु का अमृत-आशीर्वाद न ले सकी !'

उन दीन जनों के प्रति मेरे हृदय में करुणा उमड़ आयी— कैसे अन्धविश्वासी और अज्ञानी हैं ये !

अपने कमरे में जाकर मैंने सामान समेटा और दिल्ली प्रस्थान की तय्यारी की। उसी समय एक भगतजी ने कमरे में प्रवेश किया—

'बहिनजी, आप जा रही हैं ? जान पड़ता है आपको शान्ति नहीं मिली !'

'आडम्बर में भी कहीं शान्ति रहती है ?'

'आपका अनुभव यथार्थ है। स्वामीजी ने दस-बीस शिष्यायें

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

नित्य नये पंछी फँसाने के लिये छोड़ी हुई हैं। एक हमारी माता जी हैं जो परम शान्त, सौम्य और आनन्द की मूर्ति हैं। उनके दर्शन-मात्र से आपका मन नाच उठेगा ! बड़े भाग्य से ऐसी मां के दर्शन मिलते हैं।"

भगतजी ने मेरा सामान उठा लिया और मैं उनके पीछे-पीछे चल पड़ी। इस आश्रम से सटा हुआ ही माताजी का आश्रम था। एक सिंहासन पर माताजी बैठीं थीं, होठ उनके हिल रहे थे; हाथ, पैर, शरीर और शीश सीधा तथा स्थिर था। दिव्य दमकता हुआ मुखमण्डल। यदि मेरी आंखें भूल नहीं करतीं तो अंगराग से स्निग्ध, पाउडर से सुसज्जित वह चन्द्रवदन था। आँख में हल्का-हल्का सुरमा, फूलों से गुथी वेणी का शीश पर जूड़ा, अत्यन्त आकर्षित गम्भीर और तेजस्वी दर्शन था। सजावट और सौन्दर्य के योग का चमत्कार दर्शक के मस्तक को उनके चरणों में झुका देता था ! सादी सफेद साड़ी और उसके ऊपर मृगछाला इस प्रकार सुसज्जित थी जैसे स्वच्छ नभमण्डल पर इन्द्रधनुष !

मैंने अधिक-से-अधिक झुककर श्रद्धापूर्वक प्रणाम किया परन्तु मां प्रसन्न नहीं हुई। भगतजी ने चरणों में शीश रख देने का संकेत किया। प्रभाव और कोतूहल से मैंने अपने जीवन में प्रथम वार चरणों पर माथा टिकाया। माताजी ने आशीर्वादात्मक स्पर्श किया। मेरा सारा शरीर पुलक उठा—एक अपूर्व आनन्द का अनुभव मैंने किया...

'माँ ! आपके हाथों में जादू है ?' आसपास बैठे भक्तों ने

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

माताजी की जय बोली—'जयकार' मेरे हृदय के कोने कोने में गूँज गयी। जान पड़ता था हृद-तन्त्री के तारों पर किसी ने उँगली रखकर एक अद्भुत झङ्कार की है।

'मां! यह तो साक्षात् स्वर्ग है'—भगतजी ने एक विलक्षण मुद्रा से गर्दन मटकाते हुए कहा—'बहिन! यहां कामधेनु और कल्पवृक्ष है, देवी और देवता हैं अभयदायिनी जगज्जननी साक्षात् मां है। अच्छा, अब उठो! माताजी ध्यान में हैं।'

मुझे एक कमरे में ठहरा दिया गया। आश्रम के ये कमरे आधुनिक ढंग से बने हुए कोठीनुमा थे—फ्लश, बाथरूम, रेफ्रीजेटर, रेडियो, टेलीफोन आदि युग-वस्तुओं से आश्रम सुसज्जित था। मखमली कालीन और तकिये शरीर को छूकर गुदगुदा देते थे। किसी समय ऋषि-मुनि कुटियाओं में रहते थे पर तब इन सब का आविष्कार ही नहीं हुआ था। नवीनतम उपकरणों ने तप और साधना को सरल और सरस बना दिया है। और फिर त्याग की महिमा क्या कम है। कुछ भी हो, मुझे यह सब सुहाया। योग और भोग का सुन्दर समन्वय यदि धर्म पर टिका हो।

मैंने दस-पांच दिन ठहरने का निश्चय किया। घर एक पत्र लिख दिया। मेरे पति एक विशाल-हृदय, कर्मठ और सुशिक्षित व्यक्ति हैं। उन्होंने आज तक कभी मेरी स्वतन्त्रता में बाधा नहीं डाली। हम दोनों का एक-दूसरे पर पूरा विश्वास है, इसी कारण हमारे गृहस्थ की गाड़ी फक-फक करती हुई फ्लाइङ्ग-मेल की भांति बिना किसी झटके के वेग से चलती है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मेरी सावधानी और कर्म कुशलता से आश्रम निवासी हैरान थे। माताजी भी मेरे बारे में चिन्तित रहने लगी। मुझे कुछ नहीं चाहिये था, पर कोई इस पर विश्वास नहीं करता था।

एक दिन माताजी ने मुझे एकान्त में बुलाया और कहा—

'आपको क्या चाहिये ?'

'कुछ नहीं'—मैंने कहा ।

'धन-सम्पत्ति, पुत्र-पौत्र, मान-प्रतिष्ठा, मुक्ति इनमें से किसी की अभिलाषा हो तो कहिये ?'

'परमेश्वर की सब दया है।'

'तुम कुछ अजीब हो !'

'गुरु ने मुझे ऐसा ही ज्ञान दिया है।'

'कौन हैं तुम्हारे गुरु ?'

'नाम नहीं बता सकती क्योंकि उन्हें शिष्य-शिष्यायें बनाने में रुचि नहीं है।'

माताजी ने आश्चर्य से मेरी ओर घूर कर देखा। मैंने उनकी अभिलाषा स्पष्ट जान ली। वे चाहती थी मेरे-जैसी दृढ़ योग्य प्रभावशाली शिष्या।

मैंने कहा—'मां ! मुझे फेस रीडिंग का अच्छा ज्ञान है। मुख देख कर मैंने आपके अन्तर की बात जान ली है। मैं सामुद्रिक भी जानती हूँ—लाइये आपका हाथ देखूं।'

मां पर मेरा इतना प्रभाव पड़ चुका था कि वे टाल न सकी। मैंने उनका हाथ अपने हाथ में लिया और बोलना प्रारम्भ किया—

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

'आपका हाथ ऐश्वर्य-पूर्ण है, शुक्रक्षेत्र उठा हुआ और पूरा है, अतः आप सब प्रकार कुशल हैं। शुक्रक्षेत्र से विदित होता है कि आप नृत्य और संगीत-प्रिय, काम कला-प्रवीण, भावुक हैं।

माताजी ने शीघ्रता से हाथ खींच लिया—

'योगियों पर ग्रहों का प्रभाव नहीं पड़ता !'

मैंने कहा—'लाइये, आपकी योगरेखा देखूं ?'

'अब ध्यान का समय है'—मां ने कहा।

मैं कमरे से बाहर निकल रही थी कि दूधवाला एक परचा लिये आया। सरल स्वभाव से उसने परचा मुझे दिया और कहा—'३००)रु० चढ़ गये हैं, भुगतान जल्दी ही कर दीजियेगा।'

दिन में मैंने देखा कि रुपये का तकाजा करने कई प्रकार के व्यक्ति आये। मैंने मन में कहा—'इन लोगों की गृहस्थियों से भी अधिक चिन्तायें हैं।'

दोपहर को भगत जी एक महिला को लाये—अच्छे सम्पन्न घर की। भगत जी ने गद्गद् कण्ठ से हाथ जोड़-जोड़ कर निवेदन किया—मां ! इनके कोई संतान नहीं है—एक बालक देने की कृपा करें !'

मां ने आश्वासन दिया—'भगवान् शिव की चाँदी की जलहरी बनेगी और चाँदी का कलश।'

आगन्तुक महिला ने पूछा—'कितना व्यय होगा ?'

भगत जी बोले—अनुमानतः सात हजार।'

परन्तु ध्यान रहे यदि तुम्हारे परिवार के किसी भी व्यक्ति ने

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

कोई शंका की अथवा बुरा-भला कहा तो शिव अप्रसन्न हो जायेंगे।'

'नहीं-नहीं, मैं किसी को पता भी नहीं होने दूंगी।'

सात हजार रुपये आये। शिव का अभिषेक हुआ। साधु-भोज बड़े ठाट से किया गया। मुझे उस अभागिनी पर तरस आ रहा था, पर क्या करती? मैंने उससे मित्रता जोड़ी और वचन लिया कि जब दिल्ली आये मुझसे अवश्य मिले।'

तीन वर्ष के पश्चात् वही महिला मुझसे मिलने आयी। उसकी गोद अब भी रिक्त थी, मुंह पीला, आंखें धँसी हुई, क्षीण और दुःखी।

आश्चर्य से मैंने कहा—'तुम्हारी यह दशा!'

महिला ने कहा—गुरुजनों की कृपा है। आँसुओं की बूंदें उसके कपोलों पर वेग से ढलकने लगीं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मेरे कन्हैया

बालक उसे पागल समझते थे। युवक कहते थे कि पेट भरने का ढोंग है, वृद्धजन आश्चर्य से देखते थे। वह सब के आकर्षण का केन्द्र था।

उसके पास लगभग डेढ़ फुट ऊँची बालकृष्ण की मूर्ति थी। साक्षात् बालक की भांति वह उसके साथ व्यवहार करता था बोलता, खेलता, खाता, खिलाता था।

स्वयं ब्रह्ममुहूर्त में उठता और अपने बालकृष्ण को उठाता, शौचादि से निवृत्त कराता, रगड़-रगड़ कर मुंह हाथ धोता।

'नहीं उठेगा अभी? अरे कन्हैया! उठ बैठ, बहुत सो लिया देख! पौ फट रही है! नहीं सुनेगा?'

और जब कन्हैया नहीं उठा तो उसने कान पकड़ लिया, हल्की-सी चपत लगायी और पलंग से पकड़ कर खींच लिया।

'अब रोता है? जब से मैं कह रहा था—उठ बैठ, जाग! जाग!! पर तू किसकी सुनता है?'

और जब कन्हैय्या नहीं बोला तो कहने लगा—

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

'मेरे अच्छे कन्हैया ! चल रूठ मत, मुझे क्षमा कर दे अब नहीं पीटूँगा। चल भय्या ! दिशा आदि से निवृत हो ले, नहा-धो ले और सन्ध्या कर ले, फिर तुझे माखन-मिसरी खिलाऊँगा। नहीं चलेगा ? बड़ा हठी है, कभी कहना नहीं मानता। अच्छा देखें तेरी चलेगी या मेरी।'

वह उस मूर्ति को लेकर चला और बालक उसके पीछे-पीछे हो-हल्ला करते दोड़े। वह एक पल भी कन्हैया से बात किये बिना न रहता, कहता—'भय्या ! अब गोदी से उतर पड़, मैं बूढ़ा हूँ, थक गया, हैरान मत कर ! इतना बड़ा हो गया, अब तो पैरों चल नहीं चलेगा, तो ले मैं तुझे उतारे देता हूँ।'

मूर्ति को उसने सड़क पर रख दिया। जब कन्हैया न चला तो डाटा धमकाया और तब उसकी आँखों से अश्रुधारा बह चली।

'छोड़ते भी नहीं बनता और तू कहना भी नहीं मानता ? कैसा विलक्षण है ? अच्छा भय्या मैं हारा तू जीता। ले बैठ जा मेरे कन्धे पर। हँस दे कन्हैया ! चल मैं तुझे स्नान कराऊँगा। देख हवा चल रही है, सरदी है। तुझे ठंड लग गयी तो बीमार पड़ जायगा। गरम पानी से स्नान कराऊंगा।'

एक वृक्ष के नीचे लकड़ियां समेट कर उसने आग जलाई। छोटा-सा पात्र झोले से निकाला। जल भरा और गरम करने रख दिया। रगड़-रगड़ कर कन्हैया को नहलाया।

'बस अब मत नहा, सरदी लग जायेगी। मेरी कोई तो बात

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मान लिया कर, नहीं मानेगा ? कान उखाड़ लूँगा। बहुत सिर चढ़ गया है।'

'अच्छा रो मत, चल बैठ, थोड़ा-सा भजन कर लें।'

उसने आंखें बन्द कीं। दो-चार मिनट चुप बैठा और फिर बोला—'बड़ा नटखट है तू।' मैं आंखें बन्द करके बैठा कि तू भागा। ठहर मैं अभी तुझे बांधे देता हूँ।'

और उसने झोले से रस्सी निकाल कर अपने कन्हैया को वृक्ष से बांध दिया।

उसने फिर आंखें बन्द कीं, ध्यान लगाया पर तुरन्त ही चिल्ला कर बोला–'अरे ! तू फिर भागा। छोटा है पर बड़ा खोटा है। रस्सी तुड़ा ली, अरे देख भय्या ! भागे मत ! गिर पड़ेगा।'

उसकी आँखों से अश्रुधारा बह रही थी। वह भाग रहा था और चीख-चीख कर पुकारता था—कन्हैया ! मुझे छोड़ कर मत जा। मैं तेरे बिना नहीं रह सकूँगा। अब कभी नहीं मारूँगा, कभी नहीं बाधूँगा, तुझे माखन-मिसरी दूँगा आ जा ! मेरे कन्हैया !!'

थक कर वह वृद्ध बैठ गया। झोली से माखन की एक गोली निकाली मिसरी के साथ मिलाकर कन्हैया को खिलाने लगा—पर कन्हैया ने मुख नहीं खोला।

'नहीं खायगा ? हर बात में हठ। अरे भय्या खा ले। ले मैं भी तेरे साथ खाऊँगा ? नहीं खाता ? तो ले मैं फैंक देता हूँ।'

उसने माखन-मिसरी का दोना फैंक दिया। बालकों ने दौड़कर

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

उठा लिया और छीना-झपटी करके चाट गये। वृद्ध हँसा और प्रसन्नता से बोला—

'कैसा बालक है ? देता हूँ तो खाता नहीं, फैंकता हूँ तो बच्चों से झगड़ कर खाता है। अरे ! तुझे छीन के खाने में कुछ स्वाद आता है ? अच्छा देख, छीना-झपटी तो की पर चुरय्यो मत, मैं थक गया हूँ तनिक विश्राम कर लूँ तू खेल।'

वह आंख बन्द करके सोया पर उसे चैन नहीं था। आंखें खोलीं पुकार कर बोला—अरे ! माखन चुराकर भागा जा रहा है ? लौट आ, जितना चाहिये ले ले, यह सब तेरा ही है पर भागे मत ! कहीं दूर निकल गया तो मैं ढूंढते-ढूंढते थक जाऊंगा, आजा मेरे कन्हैया ! अरे ! तू बातों से माननेवाला नहीं है।'

वृद्ध उठकर भागा और फिर उस मूर्ति पर वात्सल्य भाव से हाथ फेर कर अपने पास सुला लिया।

यही उसका नित्य का कृत्य था। लोग कहते पागल है। नारियाँ अधरों पर उँगली रखकर कहतीं—'अरे राम ! कैसा पागल है यह, कभी अपने भगवान् को मारता है कभी पुचकारता है, कभी हँसता है और कभी रोता है, न इसे खाने की सुध है न पहनने की, न सोता है न जागता, दिन-रात उस मूर्ति से बात करता है।

गरमी की ऋतु थी ! वह वृद्ध एक गहरे सरोवर के किनारे बैठा अपने कन्हैया को स्नान करा रहा था।

'वत्स ! बहुत नहा लिया, अब तू कांप रहा है; तालाब से

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

बाहर आजा, मैं तेरा शरीर पोंछकर नये वस्त्र पहना दूँगा। नहीं मानेगा तू! अच्छा ले थोड़ा और नहा ले! बस नहा चुका?'

वृद्ध थर-थर काँप रहा था। उसके हाथ हिल रहे थे। बोला— 'कन्हैया! बुढ़ापे में मुझे और कुछ नहीं करना है, तेरी सेवा में मेरा जीवन है पर तू मेरी कभी नहीं मानता। मेरा भाग्य है! देख, तू काँप रहा है, अब कपड़े पहन ले भय्या! नहीं मानता तो ले आज खेल खतम कर दूँ।'

वृद्ध ने मूर्ति को उठाकर जोर से उस गहरे तालाब में फैंक दिया। फैंक तो दिया पर तुरन्त ही पुकारने लगा—'हाय मैंने क्या किया। क्रोध और अज्ञान में अपने जीवन के एकमात्र अवलम्ब को जल में फैंक दिया। हाय! अब मैं क्या करूँ।'

वृद्ध विलख-विलख कर रोने लगा। उसके इस करुण-क्रन्दन से वन, वृक्ष, पशु, पक्षी, बालक, बूढ़े, नर-नारी सभी का हृदय हिल गया। रोते-रोते वह बोला—'मेरे कन्हैया! तू नहीं निकलेगा? तो ले मैं तेरे पास आता हूँ।'

वृद्ध तालाब में उतरा। एक कदम आगे बढ़ा, छाती तक पानी आ गया। दूसरा कदम बढ़ाया पानी गर्दन तक पहुँच गया। देखनेवालों ने कोलाहल मचाया—'पागल बूढ़ा डूब रहा है! अरे कोई बचाओ!'

'वृद्ध दोनों हाथ ऊपर उठाकर फिर पुकारा—'कन्हैया आजो!'

कन्हैया हाथों में आ गया, वृद्ध ने उसका मुख चूमा और गले से लगा लिया।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पैसा

मनोरमा एक-एक दुकान पर गयी परन्तु किसी ने उसे एक जोड़ा भी नहीं दिया। धोती और साड़ियों के बिना काम भी कैसे चले ? मनोरमा के पति एक सम्पन्न प्रतिष्ठित और सफल व्यापारी थे, समाज में उनका मान था—जैसा धनवान् का होता है। उनसे भी अधिक मनोरमा की ख्याति थी। इकहरा बदन, गौरवर्ण, अङ्ग-अङ्ग की मनोहारी बनावट, गोल-गोल आंखें, शुक-जैसी नासिका, बिम्बफल-जैसे अधर और गुलाबी कपोलों का आकर्षण कुछ कम नहीं था। इतने सौन्दर्य के साथ वह शिक्षित भी थी। समाज की सेवा करने का उसे चाव था। वह बड़े अच्छे ढंग से भाषण दे लेती थी। गुणों से मनोरमा ने अपनी ख्याति बढ़ायी।

वह एक दुकान पर जाकर खड़ी हुई। दुकानकार ने उठकर अभिनन्दन किया। चाय पान तुरन्त उपस्थित किये गये। मनोरमा जैसी समाज सेविका, धनी और प्रतिष्ठित महिला का किसी दुकान

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पर जाना कम सौभाग्य की बात नहीं थी; परन्तु जब उसने धोती जोड़ों और साड़ियों की माँग रखी तो दुकानदार ने बड़े संकोच से सिर हिलाया, माथे पर उँगली रखी और कहा—'बीबीजी ! बहुत कम माल आया था सब बिक गया। शायद लच्छूमल धन्नालाल की दूकान पर आपको मिल जाये, कन्ट्रोल जो है !'

धन का काम धन से ही चलता है और फिर आज के युग में जबकि पैसा ही परमेश्वर है।

मनोरमा को खाली हाथ लौटना पड़ा और सायंकाल जब गोपाल ने धोती माँगी तो उसने बड़ी निराशा से कहा— सारा बाजार देख आयी एक भी धोती नहीं मिली।'

गोपाल ने आश्चर्य से कहा—'आपको धोती न मिले ?'

मनोरमा ने दृष्टि नीचे कर ली। उसे लगा कि उसका अपमान हुआ है। उसकी सेवा का इतना भी पुरस्कार नहीं, पर जब वस्तु ही नहीं तो कहाँ से पैदा की जाय ? देश नंगा और भूखा है, उत्पादन कम है और माँग अधिक।

उसने कहा—'देखिये ! एक कपड़े का मिल क्यों न खोला जाय ? सेवा भी होगी और आपका भी काम चलेगा।'

गोपाल हँस भर दिया—'सेवा !' कुछ क्षण रुककर बोला—'हुकमचन्द जी !'

हुकमचन्द ने कमरे में प्रवेश किया। आदर के साथ दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार करते हुए बोले—'आज्ञा कीजिये।'

'बीबीजी आज बाजार गयी थी।'

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

'जी सरकार !'

'सरकार वरकार कुछ नहीं, घर का प्रबन्ध भी उन्हीं को देखना पड़ता है और तुम……"

'जी मुझसे भूल हुई।'

'तुम्हारे जैसे योग्य प्रबन्धक के रहते मुझे धोती न मिले और बीबीजी के पास साड़ी न हो !'

'जी ! मैं आज ही प्रबन्ध करूँगा !'

सायंकाल पाँच धोती जोड़े और एक दर्जन साड़ियाँ लेकर हुकमचन्द गोपालभवन पहुँचे। मनोरमा सहम गयी और जब उसने मूल्य पूछा तो हुकमचन्द ने छपा हुआ मूल्य जोड़कर पर्चा बना दिया। कुल १६०) रु० बैठे।

गोपाल ने हुकमचन्द की ओर प्रसन्न-दृष्टि से देखा। मनोरमा के आश्चर्य का ठिकाना नहीं था। उसे बताया गया था कि इतना कपड़ा कम-से-कम ३००) रु० में मिलेगा और बाजार भाव से भी इतना ही होता था। हुकमचन्द कैसे ले आया ?

हुकमचन्द विजयी की भांति खड़ा था। गोपाल ने कहा— 'हुकम ! तुम्हें जोड़े कैसे मिल गये ?'

'सरकार बहुत आसानी से। एक दुकान पर जाकर खड़ा हुआ। दुकानदार मुझे जानता नहीं था। मैंने कहा—सेठ गोपालदास के लिये कुछ जोड़े और साड़ी चाहियें। आपका नाम लेते ही मुझे बड़ा आदर मिला। दुकानदार ने एक वस्त्र में लपेट कर जोड़े और साड़ियाँ मँगवायीं और कहा—बिना खोले ही ले जाइये वरना

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

में संकट में पड़ जाऊँगा।'

'और मूल्य ?'

'आप जैसे सेठ का नाम सुनकर मूल्य माँगने का साहस कौन कर सकता है ?'

'सेठ गोपाल फूल गये। मेरा इतना मान है। बोले—मनोरमा ! देखा, सेवा काम नहीं आयी।'

मनोरमा कुछ बोली नहीं। कृतघ्न समाज के प्रति वह विक्षुब्ध हो उठी।

नमस्कार करके हुकमचन्द चला गया। सेठ ने स्नेहमयी दृष्टि से देखा और आँखों ही आँखों उसकी प्रशंसा की।

हुकमचन्द ने ३५०) रु० का बिल चुका दिया। कपड़ा लाने में उसे १६०) रु० का घाटा रहा पर इतने में उसने स्वामी को मोल ले लिया।

दूसरे दिन मनोरमा ने हुकमचन्द को एकान्त में बुलाकर कहा—'ठीक-ठीक बतलाइये। आपने धोती जोड़े कहाँ से पाये ? मैंने एक-एक दुकान छान मारी और आप गये और ले आये—जैसे कहीं यहीं रखे हों। मुझे ले चलिये उस दुकानदार के पास।'

हुकमचन्द कुछ सिटपिटाया। वह अपने काम में कुशल था। समय को पहचानता था और बीसवीं सदी की चतुराई से भली-भांति परिचित था ! बोला—'बीबीजी ! नगर में आपकी कितनी प्रतिष्ठा है ? गोपालदास की धर्मपत्नी, समाज की नेत्री, आपको नियन्त्रित मूल्य पर कोई देता तो आपसे वह बात पचती नहीं,

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

दूसरे दुकानदार कम मूल्य में देनेवाले से द्वेष करने लगते और अधिक मूल्य में देता तो पकड़ा जाता क्योंकि आपकी पहुँच कहाँ नहीं है ?'

'अच्छा यह बात थी !' मनोरमा ने सन्तोष की साँस ली।

इस समय सेठ गोपालदास घबराये हुए आये।

'क्या आज फिर दौरा हो गया ?'

'हाँ वैद्य जी आये थे बकरी के दूध में औषधि लेने को कह गये हैं।'

'दूध लेने किसी को भेज दिया ?'

'हाँ ! मुनीम जी ने कल्लू, बुद्धू, खचेरू और मल्लू को भेजा है, जैसे भी मिलेगा उनमें से कोई न कोई लेकर आयेगा।'

मुनीम जी ने डरते-डरते चार-चार आने दिये थे और चलते-चलते कहा था—'आने-दो-आने का दूध आयेगा, अधिक पैसा खराब न करना।'

दूध चार आने में भी नहीं मिला। नौकर खाली गिलास लेकर लौटे। सेठ पलंग पर पड़े कराह रहे थे। मनोरमा पास बैठी उनके पैर सहला रही थी। हुकमचन्द गम्भीर मुख किये पलंग के पास एक कुर्सी पर बैठे थे। मनोरमा कहे भी क्या ? चार पैसे का दूध लेने सेठ का कोषाध्यक्ष और प्रबन्धक जाये ?

हुकम स्वयं ही उठ गया। एक नौकर के हाथ से झटके से गिलास छीना और बिजली की भांति कौंध कर निकल गया।

दरीबे के पास उसने एक दूधवाली बकरी देखी। गड़रिये से

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

दूध माँगा पर वह किसी मूल्य पर दूध देने को राजी न हुआ। उसे बकरी बेचनी थी। २०) रु० देकर हुकम ने बकरी ले ली और दूध निकालकर तुरन्त ले गया।

सायंकाल वैद्य जी फिर देखने आये और एक-एक घण्टे में बकरी के ताजे दूध में औषधि देने को कह गये।

'बकरी का दूध और ताजा! बड़ी कठिनाई से मिलता है वैद्य जी!' मनोरमा ने दीन स्वर में कहा।

'लाना ही होगा।' गम्भीर मुद्रा में कहते हुए वैद्य जी निकल गये।

'लाना ही होगा।' एक लम्बा साँस लेते हुए हुकम बोला—'अच्छा, इसका भी प्रबन्ध करूँगा।'

मनोरमा ने आभार भरी चितवन से कहा–आपने प्रातःकाल से कुछ लिया नहीं है लस्सी, दूध, लैमन, शर्बत कुछ तो पी लीजिये।'

'पहले दूध का प्रबन्ध करदूँ माताजी।'

हुकमचन्द स्वयं जाता और एक-एक घण्टे बाद बकरी का दूध निकाल कर ले आता। उसने मनोरमा के हृदय को सब प्रकार जीत लिया। मनोरमा को जान पड़ा कि उसका हुकम से अधिक न कोई हितचिन्तक है और न प्रिय। कभी-कभी सेठजी उन दोनों को बातचीत करते देख ईर्ष्या करते थे।

× × ×

सेठ गोपालदास के पास धन की कमी नहीं थी। सारे भारत में उनका व्यापार था कुछ नहीं तो बीस कारखाने चलते थे और

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

किसी भी कारखाने का मैनेजर अच्छे धनी से कम नहीं था। एक दिन एक शाखा का मैनेजर दिल्ली बुलाया गया। सेठ ने कहा—'सुना है तुमने एक लाख रुपया कमाया है? चुपचाप ५० हजार रुपये दे दो वरना निकाल दिये जाओगे।

मैनेजर बहुत गिड़गिड़ाया पर निकलना नहीं चाहता था। उसने २५ हजार रु० लाकर सेठ को दे दिये। धनी होकर भी सेठ रुपये का लोभ संवरण नहीं कर सकते थे। उनमें यह एक भारी छिद्र था, जिसमें से दोष प्रवेश कर जाते थे। वे स्वयं काला बाजार नहीं करते थे पर उनके यहाँ का छोटे-से-छोटा नौकर भी इस काम में चतुर था। सेठ गोपालदास के यहाँ कोई नौकर निर्धन नहीं था, फिर भी किसी में स्वामी के लिये प्रेम और श्रद्धा नहीं थी।

गोपालदास बड़े भक्त थे, तीर्थों में प्रायः उनका समय कटता था। शास्त्रों का वे अपने को पूरा पण्डित मानते थे। कीर्तन में वे आनन्द-विभोर हो खड़े हो जाते—नाचते और दर्शा देते कि उनकी भक्ति का कोई उत्तर नहीं। भागवत की कथा सुनते-सुनते सेठ कभी रोते कभी हँसते, कभी उनके शरीर की एक-एक पोरी मटकती, श्रोता उन्हीं की ओर देखते रहते।

सेठजी की भक्ति, सरल स्वभाव और धर्मभाव की ख्याति सुनकर याचकों और समाज-सेवकों का ताँता लगा रहता था। नित्य प्रातः सेठजी का दरबार जुड़ता, बड़े प्रेम से सेठजी सबसे मिलते, सबके भरपाये कर देते। कुछ न पाकर भी आगन्तुक

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रसन्न लौटते, सेठजी के स्वभाव की सराहना करते हुए।

एक दिन चार मोटरें सेठ जी के द्वार पर रुकीं। एक स्वामीजी और आठ-दस सेठ उतरे। लाहौर में एक धर्मभवन बन रहा था। उसीके लिये चन्दा लेने यह प्रतिनिधि मण्डल आया था।

सेठ गोपालदास ने साष्टांग दण्डवत् प्रणाम किया। बड़े प्रेम से स्वामी जी तथा उनके साथियों को बैठाया। सेठ का भाव देख स्वामी जी के अंगों से प्रसन्नता फूटी पड़ती थी। इतना बड़ा सेठ और ऐसा विनम्र व्यवहार!

धर्म और दान-वीरता की कथाएँ कहकर सेठजी को प्रतिनिधि मण्डल ने अपने आने का उद्देश्य बतलाया। सेठजी ने प्रसन्नता प्रकट की—'आप सच्ची सेवा कर रहे हैं। मुझसे जो बन पड़ेगा अवश्य करूँगा।'

एक लिफ़ाफे में नोट बन्द करके सेठ ने स्वामी जी के चरणों पर रख दिये—'यह मेरी तुच्छ भेंट है।'

सब बोल उठे—'वाह! वाह! जैसा सुना था वैसा ही पाया। सेठजी! हम आपके नाम का पत्थर लगायेंगे।'

हाथ जोड़कर सेठ ने प्रेम से स्वामी जी को विदा किया। स्वामी जी लिफ़ाफ़ा देखते और सेठ जी को बार-बार आशीर्वाद देते मोटर में आ बैठे।

भर-भर करती विजय का हार्न बजाती मोटरें चल पड़ीं। रायबहादुर ने कहा—'स्वामी जी! देखिये कितना रुपया मिला? और राजा केसरचन्द ने स्वामी जी के हाथ से लेकर लिफ़ाफ़ा

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

खोला—पूरे गिने गिनाये ११) रुपये थे। राजा जी की आँखें खुली की खुली रह गयी। रायबहादुर ने कहा—११) रुपये। और रामदास बोले—बीस का तो पैट्रोल फुक गया।

'बड़ा धूर्त निकला!'

'स्वामी जी! भक्त था वह।'

'भावुक भक्त।'

× × ×

हुकमचन्द ने सेठ और सेठानी को अपने हाथों का खिलौना बना लिया। सेठ जी की मनोवृत्ति को वह पहचानता था। 'एक ही विश्वास का आदमी है'—प्रायः सेठ जी कहा करते थे।

माल की बिल्टी आई। बीस गाड़ी माल था। बिल्टी लेकर हुकमचन्द सीधा गोपालदास के पास पहुँचा—

'एक गाड़ी माल मुझे दे सकेंगे आप?'

सेठ जी उत्तर दें कि इससे पहले सेठानी ने कहा—'एक नहीं दो गाड़ी लीजिये।'

उन दो गाड़ियों से हुकमचन्द को २० हजार का लाभ हुआ और धीरे-धीरे ऐसी बीसियों गाड़ी उन्हें पुरस्कार में मिली।

चार सौ रुपये पानेवाला हुकमचन्द चालीस लाख की हैसियत का बन गया? बही-खाता सही, हिसाब ज्यों का त्यों, सेवा में कोई कमी नहीं, काम में कोई ढील नहीं, कोई कहे तो क्या कहे?

× × ×

बात उन दिनों की है जब सरकार ने एक हजार का नोट

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

गैरकानूनी घोषित कर दिया था। अखबार लेकर हुकमचन्द सेठ के पास आये। खबर सुनकर सेठ के पैरों तले से धरती खिसकती जान पड़ी। भक्त और ईमानदार थे पर थे व्यापारी ही।

'बारह लाख के नोट हैं' कहते हुये सेठ हृदय पर हाथ रख माथा पकड़कर बैठ गये।

'अब क्या हो ?'

हुकमचन्द ने बड़ी चिन्ता दिखाई। आँखें सेठ के चरणों में गड़ा दीं। मनोरमा ने हुकम को इतना चिन्तित कभी नहीं देखा था। उसने सेवक को पुकारा, 'दो गिलास शर्बत लाओ।'

शर्बत आने से पहले ही सेठ जी को मूर्च्छा आ गयी। हुकमचन्द और मनोरमा ने बड़ी कठिनाई से उन्हें उठाया और पलंग पर लिटा दिया।

'बारह लाख !' बिस्तर पर सिर पटकते हुये गोपालदास ने कहा। उनका श्वांस वेग से चलने लगा। मनोरमा ने हृदय पर हाथ रखा। धड़कन की गति तीव्र हो चली। हुकमचन्द जाने लगा ! मनोरमा बोली—'ऐसे समय में मुझे न छोड़ो !' उसने हुकमचन्द का हाथ पकड़ लिया और अपने हृदय की ओर खींचते हुये कहा—'कुछ समझा करो···।'

हुकमचन्द पाषाण पुरुष था। प्रेम करना उसने सीखा नहीं था ! वह भक्तों की भांति रहता था पर धर्म और भक्ति को रत्ती भर भी नहीं जानता था। सेठ और सेठानी की सेवा करता था पर सेवाभाव से नहीं, उसका एक ही ध्येय था—'पैसा।' साठ

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

हज़ार के नोट अंटी में लगाकर वह आया था—सेठ की तिजोरी में से बदलने। यहां सेठजी ही संकट में थे। मनोरमा से हाथ छुड़ाकर वह भागा—'यह संकट का समय है मनोरमा! छोड़ दो मुझे, अभी औषधि का प्रबन्ध करके आता हूँ।'

हुकमचन्द का भाई नगर का एक प्रसिद्ध व्यापारी था और भाई का बेटा मौला पढ़ा-लिखा तथा कर्म-कुशल था। सी० आई० डी०, पुलिस और क्लब के साथियों से काम निकालने में वह प्रवीण था।

हुकमचन्द सीधा मौला के पास पहुंचा! हज़ार रुपये का नोट उसके हाथ पर रखा।

'यह क्या?'

'दस-दस रुपये के नोट चाहियें।'

'पर इसे किस हिसाब में दिखाऊँगा? मेरे पास भी बीस नोट पड़े हैं।'

'जहाँ बीस वहाँ इक्कीस।'

'नहीं, चाचा जी!'

'मौला! तुम्हारी मुलाकात किस काम आयेगी?'

मौला ने मुट्ठी बाँधी! मेज पर मारी! सीटी बजायी और खड़ा हो गया।

हुकमचन्द बोला—'मैं भी साथ चलूँगा बेटा! समय खराब है किसी चक्कर में न पड़ जाओ।'

एक-एक नोट करके हुकमचन्द ने अपने चालीस नोट भुनवा लिये। छः सौ रुपये के भाव में नोट बेचे गये थे। बीस नोट शेष रहे थे।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

हुकमचन्द और मौला मोटर में बैठकर उन्हें बेचने जा रहे थे कि थानेदार ने रोकते हुए कहा—'मौला ! पुलिस तुम्हारे पीछे है, एस० पी० साहब स्वयं आ रहे हैं।'

हुकमचन्द ने जनेऊ निकाल कर कान पर चढ़ाया। नोटों का रूमाल मौला की गोदी में डाला और धीरे से दरवाजा खोलकर खिसक गया।

सायंकाल हुकमचन्द अपने भाई से मिलने गया। देखा कि पिता-पुत्र, प्रसन्नता से भोजन कर रहे हैं। मौला ने कहा—'चाचा जी ! आप आ गये। मैं भोजन करके आपके पास आता, यह लीजिये अपने रुपये। सात सौ के भाव में बिके और अभी भाव बढ़नेवाला है।'

हुकमचन्द ने बड़ा प्रेम दिखाया। मौला की पीठ ठोकी ! बोले-'मैं लघुशंका करने उतरा था। लौटा तो मोटर नहीं मिली।'

'जल्दी में था चाचा ! पुलिस सामने थी। बीस हजार की जोखिम छोड़ आप गायब थे, फिर करता क्या ?'

'बड़े चतुर हो तुम !'

'हूँ तो नहीं, पर आपकी कृपा से हो जाऊँगा।'

हुकमचन्द ने कान में कहा—'मौला ! बारह लाख के नोट और हैं।'

'तो जल्दी करिये चाचा जी ! आज सात सौ का भाव है कल की राम जाने।'

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

हुकमचन्द सीधा गोपालदास के पास पहुँचा।

'तीन दिन कहाँ रहे तुम ? देखो तुम्हारी चिन्ता में मनोरमा पड़ी है। तुमने कुछ ऐसा जादू किया है कि वह एक दिन भी तुम्हारे बिना नहीं रह सकती।

'क्या कहूँ सेठजी ! आपका नमक खाया है, बजाऊँगा। घर गये तीन दिन हो गये हैं। बारह लाख की चिन्ता में था। प्रबन्ध करके आज दम लिया है। पाँच सौ के भाव में जान छुड़ायी है, सरकार बड़ी सख्ती पर उतर आयी है। अपनी जान जोखिम मे डालकर मैंने प्रबन्ध किया है।'

'शाबास !' सेठजी ने प्रसन्नता से कहा। उनके शब्द से कमरा गूँज उठा, मनोरमा जाग गयी।

'मैंने कहा था ना कि हुकमचन्द काम किये बिना नहीं लौटेंगे। मुझे तो इन पर आपसे भी अधिक विश्वास है'—मनोरमा बोली।

× × ×

सरकार की सख्ती से काला बाजार धीरे-धीरे समाप्त होने लगा, अन्तिम अवसर था। माल की गाड़ियाँ आई। हुकमचन्द ने कहा—'दो गाड़ियाँ मुझे दे दीजिये।' सेठजी बिगड़ उठे—

'मुझे भूखा मारोगे ?'

'जी···कभी नहीं !'

'हां हां, तुम्हारी नीयत बदल···।'

'ऐसा न कहिये'—मनोरमा ने कहा।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

'मनोरमा ! आँखों में धूल झोंकने की कोशिश न करो,' सेठ बोले।

हुकमचन्द चुपके से चला गया। दफ्तर में जा बैठा। एक सेवक ने कहा—'खजाञ्ची साहब ! पन्द्रह सौ रुपये की बड़ी आवश्यकता है।'

हुकमचन्द की आँखें लाल हो गयीं—'मैं देते-देते हार गया, तुम्हारा पेट नहीं भरता ?'

सेवक भी गरम हो गया—खजाञ्ची साहब ! आप शीशे के महल में बैठे हैं। एक पत्थर लगते ही यह भवन चकनाचूर हो जायगा।'

'निकल जाओ तुम पाजी !'

जब तक पैसा मिलता था, हुकमचन्द सबको देता था। अब वह आशा टूट गयी थी। दुकान के वेतन से गुजारा भी नहीं चल सकता था। धीरे-धीरे पैसे के साथी-सेवक विरुद्ध हो गये।

एक दिन पुलिस ने छापा मारा। बही-खाते ठीक थे। माल का हिसाब-किताब भी पूरा था पर पुलिस को कुछ पता लगा था।

हुकमचन्द आज भी दौड़-धूप कर रहे थे पर स्वामी से अधिक उन्हें अपनी चिन्ता थी।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मानवधर्म कार्यालय दिल्ली से प्रकाशित

उपहार में देने योग्य कुछ पुस्तकें

१. श्रीहरिगीता—गीता का सरल सरस प्रामाणिक पद्यानुवाद। २॥)
२. गीताज्ञान—गीता का जीवनोपयोगी नवीनतम भाष्य २०)
३. गीता अध्ययन—प्रारम्भिक शिक्षा के लिये सरल गीता। १॥)
४. गीता के सप्तस्वर—गीता का सात दिन का पाठ और कार्यक्रम ॥)
५. युगनिर्माता महापुरुष—श्रेष्ठजनों के चरित्र और कार्य। १)
६. सन्त-समागम (जीवन सम्बन्धी प्रश्नों के उत्तर) भाग १, २—२) २॥)
७. सत्यनारायण की कथा—कविता में, श्लोकों व पूजा विधि सहित। ॥।)
८. गायत्री साधना—महामंत्र गायत्री की साधना-व्याख्या ।)
९. दैनिकप्रार्थना—प्रार्थनाओं का सुन्दर संग्रह। ।)
१०. गौमाता—गौ सम्बन्धी उत्तम पुस्तक। =)
११. बालपद्यमाला (बालकों के लिये उपयोगी कवितायें) भाग १, २, ।=)
१२. श्रीसूक्त—सौभाग्य वृद्धि लक्ष्मी प्राप्ति के मन्त्र, पद्यानुवाद सहित। ।)
१३. मणिमाला—रचनात्मक मन्त्र पद्यानुवाद सहित। ।)
१४. मार्ग-दर्शन—सद्गुरु को पहचानने और पाने के लिये ।=)
१५. 'अपना-अपना राग है'—कर्मप्रेरक मनोरंजक सात कहानियाँ। ॥)
१६. कथा-कहानी—धार्मिक कहानियां। ४)
१७. उपनिषद्ज्ञान १—ईशोपनिषद् मंत्र पद्यानुवाद और व्याख्या सहित १)
१८. मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम—श्रीराम के चरित्र तथा सन्देश ।=)
१९. योगेश्वर श्रीकृष्ण—श्रीकृष्ण के चरित्र तथा सन्देश ।=)
२०. भगवान् गौतम बुद्ध—बुद्ध के चरित्र तथा सन्देश ।=)
२१. स्वास्थ्य साधना—नित्य स्वस्थ रहने के प्राकृतिक उपाय ।=)
२२. शक्ति साधना— ।)
२३. झलक—भक्तिभाव भरी हृदयस्पर्शी कवितायें २)
२४. भाग्योदय-अङ्क—भाग्य बनाने के साधन और सुझाव ४)

मानवधर्म कार्यालय पीपल महादेव, दिल्ली-६

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मानव धर्म

ज्ञान, भक्ति, कर्म और जीवन सम्बन्धी
आध्यात्मिक और व्यावहारिक सचित्र मासिक-पत्र

कर्म
उपासना
ज्ञान
सदाचार

● मानवधर्म के उद्देश्य

१. भारतीय संस्कृति और साहित्य का उत्थान।
२. रचनात्मक प्रकाशनों द्वारा चरित्र-निर्माण।
३. जीवन का सर्वतोमुखी विकास।
४. श्रीमद्भगवद्गीता के ध्येय की पूर्ति।
५. घर-घर जीवनोपयोगी साहित्य पहुँचाना।

● मानवधर्म के नियम

१. विशेषांक सहित वार्षिक मूल्य ७) रुपया है।
२. मानवधर्म का वर्ष अप्रैल से प्रारम्भ होता है।
३. ग्राहक किसी भी महीने से बन सकते हैं।
४. वर्ष का प्रथम अंक विशेषाङ्क होता है।
५. ग्राहकों को विशेषांक अमूल्य मिलता है।
६. विशेषांक का पृथक् मूल्य ४) होता है।
७. अंक मास के दूसरे सप्ताह तक पहुँचता है।
८. मानवधर्म के एक अङ्क का मूल्य ।।।) है।
९. केवल विश्वस्थनीय विज्ञापन लिये जाते हैं।

मानवधर्म में कथा, कहानी, कविता, जीवनोपयोगी लेख, प्रश्नोत्तर, वेद, उपनिषद्, गीता, दर्शन-शास्त्रों की व्याख्या और भागवत की रहस्यमयी, प्रेमपूर्ण कथा पढ़कर आप यथार्थ आनन्द अनुभव कर सकेंगे।

अपने मित्रों और परिजनों को मानवधर्म उपहार में दीजिये। देने वाले और लेने वाले दोनों को सुख मिलेगा और दोनों का हित होगा।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

मानवधर्म कार्यालय, पीपल महादेव, दिल्ली-६